हंसती दुनिया
वर्ष 46
अंक 8
अगस्त 2019
₹15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 46 ● अंक 8 ● अगस्त 2019 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कांलोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
18. समाचार
29. अजूबी बातें
31. भारत में प्रथम
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

13. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

9. छोटी सी बात
: जाकिर अली 'रजनीश'

21. इमली का पेड़
: गोविन्द भारद्वाज

26. चोर की ईमानदारी
: मदन कोथूनियां

32. गलती का एहसास
: कृष्ण शर्मा

40. खरगोश फिर हार गया
: गफूर स्नेही

46. प्रशंसा के चक्कर में
: अर्चना सौगानी

कविताएं

8. तीन बाल कविताएं
: हरजीत निषाद

17. आजादी का बिगुल
: डॉ. ममता खत्री

23. दो बाल कविताएं
: कमल सिंह चौहान

30. सैनिक तुम महान हो
: बलतेज कोमल

30. नया सवेरा
: दिनेश दर्पण

39. आज तिरंगे को फहरायें
: शिवनारायण सिंह

विशेष/लेख

6. बाबा अवतार सिंह जी के अनमोल वचन

7. निरंकारी राजमाता जी के अनमोल वचन

7. माता सविंन्दर हरदेव जी के अनमोल वचन

19. जुगनू
: अंकुर श्रीश्रीमाल

24. पहेलियां
: राधा नाचीज

25. क्या होता है? स्पेस सूट
: विद्या प्रकाश

28. छापाखाना का आविष्कार
: राधा नाचीज

42. भारतीय गेंडा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

हँसी-खुशी से जियें

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है इसलिए इसे प्रसन्नता और खुशी से खुशहाल जीवन जीने के लिए जीवन का अनिवार्य हिस्सा बना लेना चाहिए। हँसमुख चेहरा सभी को खुशी देता है और व्यक्ति स्वयं भी प्रसन्न रहता है। प्रसन्नता केवल चेहरे पर ही न हो, पूरा व्यक्तित्व एवं सारा समय हँसी-खुशी से बीते ऐसा प्रयास होना चाहिए।

एक बार दो मित्र अपने कॉलेज में पढ़ने जा रहे थे। बरसात का मौसम था। वे हँसते-खेलते बातचीत में मस्त थे। उनका ध्यान अन्य किसी स्थिति-परिस्थिति से अनजान था। अचानक एक मित्र का पाँव आगे कीचड़ के गड्ढे में पड़ा और वह धड़ाम से उसमें जा गिरा। दूसरा मित्र उसकी इस दशा को देखकर खिल-खिलाकर हँसने लगा क्योंकि उसके मुँह पर कीचड़ लगा हुआ था। उसका इस तरह का विचित्र चेहरा देखकर वह अपनी हँसी को रोक नहीं पा रहा था। फिर भी उसने कीचड़ में सने मित्र को बाहर निकालने के लिए अपना हाथ मित्र की ओर बढ़ाया और उसको खींचने का प्रयास किया परन्तु कीचड़ से सने मित्र ने अपने मित्र का हाथ पकड़ा और उसको भी पूरी शक्ति लगाकर कीचड़ में गिरा दिया। अब दोनों कीचड़ में थे। दोनों ने इस परिस्थिति में भी बड़े विनोदपूर्ण ढंग से इसका आनन्द उठाया और फिर अपने-अपने घर वापस लौट आए।

किसी भी स्थिति-परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाकर उसका सदुपयोग भी किया जा सकता है और उसी को प्रतिकूल समझकर निराशाजनक व्यवहार भी किया जा सकता है। यह सब हमारी अपनी-अपनी समझ, बुद्धि और व्यावहारिक आचरण से सम्बन्धित होता है। हमारा जीने का ढंग किसी दूसरे के उपहास का कारण नहीं होना चाहिए। हमें हँसना चाहिए लेकिन वह हँसी किसी और के हृदय को चोट पहुँचाए ऐसी हँसी और खुशी किसी तरह से उचित नहीं है।

जीवन में हँसना बहुत आवश्यक है। हँसता-हँसाता हमारा प्रेम और सौहार्दपूर्ण व्यवहार सभी को आकर्षित करता है और हमें भी अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करता है। कभी-कभी हमें अपनी मूर्खता पर भी हँसना चाहिए और यह तभी सम्भव है जब हम अपने व्यवहार का, आचरण का यदा-कदा अवलोकन करें। इस तरह का चिन्तन-मनन हमारे व्यक्तित्व को बहुत ऊपर उठाएगा और हमारे व्यवहार में भी अच्छा बदलाव आएगा।

प्यारे साथियों! हमें खूब हँसना चाहिए। हम सभी हँसती दुनिया में आए हैं। जब हम खूब खिल-खिलाकर हँसते हैं तो यह हँसी संक्रामक हो जाती है और दूसरों को भी बिना कारण हँसने का अवसर देती है। हँसते समय हमारे मन में किसी तरह का भी विचार नहीं आता। हम सभी तरह के विचारों से मुक्त हो जाते हैं। इस प्रक्रिया को हम अनायास ही अनुभव कर सकते हैं। फिर हमारा हँसना, खेलना-कूदना किसी भी परिस्थिति का मोहताज नहीं रहेगा और हमारा तन-मन स्व-स्फूर्ति और ऊर्जा से भर जाएगा। यही ऊर्जा हमारे जीवन को स्फूर्ति प्रदान करती है। यही ऊर्जा मित्रों से, परिवार से और पूरे समाज से प्रेमपूर्वक जीने का कारण बनती है। हँसी की कोई जाति नहीं होती, उम्र नहीं होती। हँसी बच्चे, नवयुवक, बालिग, प्रौढ़, बुजुर्ग, पढ़े-लिखे और अनपढ़ सभी का खून बढ़ाती है और उन्हें तरोताजा कर देती है। इसलिए जी भरकर हँसे और हँसाएं क्योंकि जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 192

जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस बन्दे लई मौज बहार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस दी कदी न होवे हार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस नूं पूजे एह संसार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस दा होवे बेड़ा पार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस दे देवें कम्म संवार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उसनूं बख़्शें नाम भंडार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस दी होवे जै जै कार।
जिस दा पक्ख करें तूं स्वामी उस नूं कोई न सक्के मार।
सारी दुनियां वस विच तेरे तूं भगतां दे वस करतार।
अपणा कीता आपे जाणें दासनदास कहे अवतार।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि यह स्वामी, यह सद्गुरु-दातार जिसका पक्ष करता है उसको हर प्रकार से भरपूर और सक्षम कर देता है। जिस मानव का यह पक्ष करता है उसके जीवन में मौज बहार आ जाती है। उसका दुख में घिरकर रोना-धोना समाप्त हो जाता है। संसार में रहते हुए वह सदैव विजयी होता है। उसकी कभी हार नहीं होती। यह स्वामी जिसका पक्ष करता है, वह सारे संसार में पूजा जाता है। उसे सब जगह मान-सम्मान प्राप्त होने लगता है, इसलिए नहीं कि उसमें कोई विशेषता है बल्कि इसलिए क्योंकि उसके पक्ष में स्वयं जगत का स्वामी है। सांसारिक बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के साथ-साथ सद्गुरु की कृपा से सहज ही उसका बेड़ा भवसागर से पार हो जाता है। वह मझधार में फंसकर नहीं रह जाता। उसका हर प्रकार से कल्याण तो होता ही है इसके साथ-साथ उसे मुक्ति भी प्राप्त होती है।

यहाँ पक्ष करने का भाव पक्षपात करने से नहीं अपितु सहारा बनने से, सहयोग देने से है। जिसका यह सहारा बनता है, जिसके पक्ष में आ खड़ा होता है, उसके सारे बिगड़े कार्य संवार देता है। संसार में सबसे बिगड़ी बात जीवन बाजी हारने की है। यह केवल पदार्थों और उपलब्धियों की प्राप्ति की बात नहीं है। जीवन बाजी वही जीतता है जिसके पास सद्गुरु प्रदत्त नाम धन हो, जिसे गुरु-कृपा से नाम धन का भण्डार मिल गया हो। इसी से मानव को अपने वास्तविक जीवन लक्ष्य अर्थात् मुक्ति प्राप्त होती है। नाम धन की प्राप्ति के उपरान्त मानव के सारे बिगड़े काम बन जाते हैं और जगत में उसकी जय-जयकार होने लगती है। यह स्वामी जिसका पक्ष करता है, उसे कोई मार नहीं सकता, वह जीवन के पथ पर निर्भीकता से आगे बढ़ता जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी स्वयं को दासों का भी दास बताते हुए अत्यन्त विनम्रता के साथ बता रहे हैं कि सारी दुनिया जिस सद्गुरु-दातार के वश में है, प्रेमवश यह स्वयं भक्तों के वश में होता है। अपनी लीला यह आप ही जानता है, अन्य कोई इसे नहीं जान सकता है। अतएव संसार के हर मानव को ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे कि उसे स्वामी का पक्ष हासिल हो जाए और लोक-परलोक के उसके सारे कार्य संवर जाएं।

बाबा अवतार सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

★ सुख केवल निरंकार-प्रभु की शरण में है।

★ ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के बाद मन की भटकन बिल्कुल समाप्त हो जाती है और उस गुरसिख की प्रीत गुरु से निभ जाती है।

★ सब कुछ निराकार-प्रभु की आज्ञानुसार ही हो रहा है।

★ सन्तों के साथ धोखा, छलकपट मत करो वरना सुख नहीं मिलेगा।

★ जब हम प्रभु को भूल जाते हैं तो सारा संसार शत्रु बन जाता है। जब यह निरंकार-प्रभु याद होता है तो हमारे सभी काम शुभ होते हैं।

★ सद्गुरु अन्तर्यामी है, यह सब जानता है।

★ मर्यादा में रहकर सबसे नम्रता-प्रीत-प्यार का व्यवहार करो।

★ अभिमान बिल्कुल नहीं करना, हर समय नम्रतापूर्वक रहना है।

★ भक्ति बिना सपने में भी सुख नहीं।

★ भक्ति का अर्थ है– भगवान को जानकर सन्तों की निष्काम सेवा करना।

★ माया में उलझकर कोई ऐसा काम न करें जिससे आपका लोक-परलोक ही बिगड़ जाये।

★ भक्ति का कोई निश्चित समय नहीं होता है। ज्ञानीजन स्वांस-स्वांस भक्ति करते हैं।

★ अगर कोई कटु वचन भी कह दे तो भी आगे से मीठे वचन ही बोलना है तब जाकर कहीं गुरु का हृदय प्रसन्न होता है।

★ भक्त सद्गुरु से प्रेम करते हैं और सद्गुरु अपने भक्तों से प्रेम करता है।

★ निरंकार (ब्रह्मज्ञान) पर दृढ़ रहें, डांवाडोल नहीं होना है।

★ सद्गुरु के बिना जीवन व्यर्थ है।

★ गुरसिख सत्य का पुजारी होने के कारण सच्चे गुरु के हर आदेश पर पूरा विश्वास करता है और उसी के अनुकूल जीवन को ढालने में गर्व का अनुभव करता है।

★ परमात्मा पर विश्वास रखें।

★ ईश्वर को जानने वालों के अन्दर-बाहर ईश्वर है और वे ईश्वर के ही स्वरूप हैं।

★ सबके अन्दर एक ही नूर है।

★ एक-दूसरे को प्रेमभाव से देखें।

★ यदि आप प्यार का बीज डालेंगे तो प्यार मिलेगा। यदि नफरत का बीज बोयेंगे तो नफरत।

–संकलनकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

निरंकारी राजमाता जी के अनमोल वचन

★ जिस घर में स्त्री जाति का अनादर होता है, वहाँ से लक्ष्मी, धर्म और सुख का वास उठ जाता है।

★ भक्ति-रहित ज्ञान कभी मानसिक शान्ति नहीं देता।

★ जैसे गंगा में लीन हो चुका कोई भी जल, गंगाजल कहलाता है। इसी तरह जो हरि के समक्ष खुद को मिटा देता है, वह हरि रूप ही हो जाता है।

★ जिस आदमी को आत्मिक सुख प्राप्त है, वह निर्धन भी धनवान है।

★ असल महक और स्वच्छता मन की निर्मलता, सुन्दर व्यवहार और नेक आचरण के साथ ही आ सकती है।

★ मन की अवस्था ही इन्सान को भक्त या राक्षस बनाती है।

★ प्रभु के साथ जुड़े भक्तों के जीवन में प्रेम की लहरें फूटती हैं।

★ आपका एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता और आपका एक पल का सत्संग आपका भविष्य बना सकता है।

माता सविन्दर हरदेव जी के अनमोल वचन

★ जहाँ विश्वास, भक्ति और समर्पित भाव एक भक्त का गहना होता है, वहीं भक्ति का एक अहम् हिस्सा चेतना भी होती है।

★ सन्त जहाँ भी जाते हैं अपनी भक्ति की सिखलाई, अपनी भक्ति की महक साथ लेकर जाते हैं उस महक से सारे संसार को महका देते हैं।

★ प्यार, नम्रता, विशालता, मानवता और सहानुभूति इन्सान के उत्तम गुण हैं।

★ महापुरुष तो हमेशा यही प्रयास करते हैं कि मन, वचन, कर्म से सबकी समस्याओं का हल कर पाएं।

★ सकारात्मक बदलाव के लिए पहले स्वयं को बदलना होगा।

★ जिसने अपने मन पर काबू कर लिया समझो उसने दुनिया पर काबू कर लिया।

– संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

तीन बाल कविताएं : हरजीत निषाद

ध्वज तिरंगा लहराया

स्वतंत्रता दिवस आया।
ध्वज तिरंगा लहराया।
बच्चे सज-धजकर निकले।
खुशियों का है दिन आया।

सबसे ऊपर केसरिया।
रंग हरा नीचे बढ़िया।
श्वेत रंग बीच में जिसमें।
नीले रंग का है पहिया।

हाथों में ध्वज ले निकले।
छात्र किसान जवान चले।
वाहन, भवनों पर लहराते।
दिल को लगते हैं भले।

रेशम के धागों का

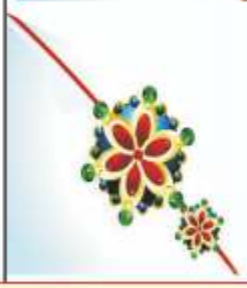

सावन का माह झरे रिमझिम फुहार।
रक्षाबंधन का आया पावन त्योहार।
नए-नए कपड़ों में सजे बहन भाई।
दिलों में सभी के रहा उमड़ प्यार।

रेशम के धागों का मजबूत बंधन।
माथे पर चमके रोली और चन्दन।
प्यार से मिठाई खिलाती हैं बहनें।
आंख भर आई आया भर मन।

रक्षाबंधन आया

रेशम की डोरी।
थाली में रोली।
रक्षाबंधन आया।
सजाओ रंगोली।

चौक सुन्दर सजाकर।
भाई को बिठाकर।
रेशम की डोर बांधी।
रसगुल्ला खिला कर।

मेघों की छांव तले।
इन्द्रधनुषी दीप जले।
भाई की कलाई पर।
चमकीली राखी खिले।

बहन और भाई का।
रिश्ता सच्चाई का।
रक्षाबंधन है महान।
पर्व अच्छाई का।

बाल कहानी : जाकिर अली 'रजनीश'

छोटी सी बात

आसमान में बादल छाए होने के कारण उस समय काफी अंधेरा हो गया था। हालांकि अभी साढ़े चार बजे का समय ही हुआ होगा, लेकिन इसके बावजूद लग रहा था, जैसे शाम के सात बज रहे हों। उधर सलिल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह चुपचाप जंगल में इधर-उधर टहलता रहा। उस समय भी उसके गले में एक गुलेल और हाथ में एक छड़ी थी। उसकी नजरें सावधानीपूर्वक इधर-उधर नाच रही थीं। उन्हें तलाश थी किसी मासूम जीव की, जिसे सलिल अपना निशाना बना सके। नन्हें जीवों पर अपनी गुलेल का निशाना लगाकर सलिल को बड़ा मजा आता। जब वह जीव गुलेल के निशाने से बिलबिला उठता, सलिल खुशी से नाच उठता। उस समय उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रहती।

अचानक सलिल को लगा कि उसके पीछे कोई आ रहा है। उसने धीरे से पीछे मुड़कर देखा। देखते ही उसके पैरों के नीचे की जमीन खिसक गयी और वह एकदम से चिल्ला पड़ा।

सलिल से लगभग बीस कदम पीछे दो चिम्पांजी चले आ रहे थे। सलिल का शरीर भय से एकदम कांप उठा। उसने चाहा कि वह वहाँ से भागे। लेकिन पैरों ने उसका साथ छोड़ दिया। देखते ही देखते दोनों चिम्पांजी उसके पास आ गये। उन्होंने उसे अपने हाथों में टांग लिया और तेजी से एक ओर चल पड़े।

कुछ ही पलों में सलिल ने अपने आपको एक बड़े से चबूतरे के सामने पाया। चबूतरे पर जंगल का राजा सिंह विराजमान था और उसके सामने जंगल के तमाम जानवर लाइन से बैठे हुए थे।

सलिल को जमीन पर पटकते हुए एक चिम्पांजी ने राजा को सम्बोधित कर कहा– स्वामी, यही है वह दुष्ट बालक, जो जीवों को अपनी गुलेल से सताता रहता है।

शेर ने सलिल की ओर घूरकर देखा।– क्यों मानव पुत्र, तुम ऐसा क्यों करते हो?

सलिल ने बोलना चाहा, लेकिन उसकी जुबान से कोई शब्द न फूटे। अतः वह मन ही मन बड़बड़ाने लगा।– क्योंकि मैं जानवरों से श्रेष्ठ हूँ।

–देखा आपने स्वामी?– इस बार चीता बोला– कितना घमण्ड है इसे अपने मनुष्य होने का। आप कहें तो मैं अभी इसका सारा घमंड निकाल दूँ।– कहते हुए वह अपने दाहिने पंजे से जमीन खरोंचने लगा।

सलिल हैरान कि भला इन लोगों को मेरे मन की बात कैसे पता चल गयी? लेकिन चीते की बात सुनकर वह भी कहाँ चुप रहने वाला था। पूरी ताकत लगाकर इस बार वह बोल ही पड़ा।

–हाँ, मनुष्य तुम सब जीवों से श्रेष्ठ है, महान है और ये प्रकृति का नियम है कि बड़े लोग हमेशा छोटों को अपने ढंग से चलाते हैं।

तभी ऑस्ट्रेलियन पक्षी 'नॉइजी स्क्रब' जिसकी शक्ल कोयल से मिलती-जुलती है, उड़ता हुआ वहाँ आया और सलिल को डपटकर बोला– बहुत नाज है तुम्हें अपनी आवाज पर क्योंकि अन्य जीव तुम्हारी तरह बोल नहीं सकते। पर इतना जान लो कि सारे संसार में मेरी आवाज का कोई मुकाबला नहीं। दुनिया की किसी भी आवाज की नकल कर सकती हूँ मैं।... क्या तुम ऐसा कर सकते हो?

सलिल की गर्दन शर्म से झुक गयी और नॉइजी स्क्रब अपने स्थान पर जा बैठी।

सलिल के बगल में स्थित एक पेड़ की डाल से अपने जाल के सहारे उतरकर एक मकड़ी सलिल के सामने आ गयी और फिर उस पर से सलिल की शर्ट पर छलांग लगाती हुई बोली– देखने में छोटी जरूर हूँ, पर अपनी लम्बाई की चालीस गुना दूरी फांद सकती हूँ और अपने शरीर से 150 गुना वजन उठा सकती हूँ। बोलो, क्या तुम ऐसा कर सकते हो?

तभी मेंढक-सा उछलता हुआ वहाँ पिस्सू आ धमका और बोला– पहचाना मुझे? पिस्सू हूँ, पिस्सू। तुम लोगों के द्वारा फैलायी गयी गंदगी में ही पलता-बढ़ता हूँ। मगर इतना ध्यान रखो कि मैं अपने शरीर की लम्बाई से 120 गुना लम्बी छलांग मार सकता हूँ। क्या तुम मेरा मुकाबला कर सकते हो? कभी नहीं। तुम्हारे अन्दर यह क्षमता ही नहीं। पर, घमंड जरूर है 120 गुना। क्यों?– कहते हुए उसने दूसरी ओर छलांग मार दी।

तभी गुटरगूं करता हुआ एक कबूतर सलिल के कंधे पर आ बैठा और अपनी गर्दन को हिलाता हुआ बोला– मेरी याददाश्त से तुम लोहा नहीं ले सकते। दुनिया के किसी भी कोने में मुझे ले जाकर छोड़ दो, मैं वापस अपने स्थान पर आ जाता हूँ।

सलिल सोच में पड़ गया और सर नीचा करके अपना पैर जमीन में रगड़ने लगा।

–मैं हूँ गरनाई मछली। जल, थल, नभ तीनों जगह पर मेरा राज है। ये स्वर पेड़ पर बैठी एक मछली के थे।– पानी में तैरती हूँ, आसमान में उड़ती हूँ और जमीन पर चलती हूँ। अच्छा, मुझसे मुकाबला करोगे?

तभी उसके कपड़ों से निकलकर एक खटमल बाहर आया और धीमे स्वर में बोला– सहनशक्ति में

मेरा जवाब नहीं। यदि एक साल भी मुझे भोजन न मिले, तो हवा खाकर जीवित रह सकता हूँ। तुम्हारी तरह नहीं कि एक वक्त खाना न मिले, तो आसमान सिर पर उठा लो।

खटमल के चुप होते ही एल्सेशियन नस्ल का कुत्ता सामने आ पहुँचा और भौंकते हुए बोला– स्वामीभक्ति में मनुष्य मुझसे बहुत पीछे है पर इतना और जान लो कि मेरी घ्राण शक्ति (सूंघने की क्षमता) भी तुमसे दस लाख गुना बेहतर है।

पत्ता खटकने की आवाज सुनकर सलिल चौंका और उसने पलटकर पीछे देखा। वहाँ पर 'बार्न आउल' प्रजाति का एक उल्लू बैठा हुआ था। घूरकर बोला– इस तरह मत देखो घमण्डी लड़के, मैं तुमसे सौ गुना बेहतर देख सकता हूँ समझे?

सलिल अब तक जिन्हें हेय और तुच्छ समझ रहा था, उन्हीं के आगे अपमानित हो रहा था। अन्य जीवों की खूबियों के आगे वह स्वयं को तुच्छ अनुभव करने लगा था। इससे पहले कि वह कुछ कहता या करता, दौड़ता हुआ एक गिरगिट वहाँ आ पहुँचा और अपनी गर्दन उठाते हुए बोला– रंग बदलने की मेरी विशेषता तो तुमने पढ़ी होगी, पर इतना और जान लो कि मैं अपनी आँखों से एक ही समय में अलग-अलग दिशाओं में एक साथ देख सकता हूँ। मगर तुम ऐसा नहीं कर सकते। कभी नहीं कर सकते।

दोनो चिम्पांजियों के मध्य खड़ा सलिल चुपचाप सब कुछ सुनता रहा। भला वह जवाब देता भी तो क्या? उसमें कोई ऐसी खूबी थी भी तो नहीं, जिसे वह बयान करता। वह तो सिर्फ दूसरों को सताने में ही अभी तक आगे रहा था।

तभी चीते की आवाज सुनकर सलिल चौंका। वह कह रहा था– खबरदार, भागने की कोशिश मत करना क्योंकि मेरी 100 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार के आगे तुम जा न सकोगे। वैसे भी तुम्हारी औकात ही क्या, जो तुम हमारा मुकाबला करो?

–क्यों नहीं है औकात? चीते की बात सुनकर सलिल अपना आपा खो बैठा और जोर से बोला– मैं तुम सबसे श्रेष्ठ हूँ क्योंकि अक्ल है मेरे पास और वह तुम में से किसी के भी पास नहीं।

सलिल की बात सुनकर सामने के पेड़ की डाल से लटक रहा चमगादड़ अपनी जगह से बड़बड़ाया, 'बड़ा घमण्ड है तुझे अपनी अक्ल पर नकलची मनुष्य। तूने हमेशा हम जीवों की विशेषताओं की नकल करने की कोशिश की है। तब तुम्हें मालूम हुआ कि मैं एक विशेष प्रकार की अल्ट्रासाउंड तरंगें छोड़ता हूँ, जो सामने पड़ने वाली किसी भी चीज से टकराकर वापस मेरे पास लौट आती हैं जिससे मुझे दिशा का ज्ञान होता है तो मेरी इस विशेषता को चुराकर तुमने राडार बना लिया और अपने आपको बड़ा बुद्धिमान समझने लगे?'

–बहुत बुद्धिमान समझते हो अपने आपको?– इस बार मकड़ी गुर्रायी– ऐसी बात है तो फिर मेरे जाल जितना महीन व मजबूत तार बनाकर दिखाओ। नहीं बना सकते तुम इतना महीन व मजबूत तार। इस्पात के द्वारा बनाया गया इतना ही महीन तार मेरे जाल से कहीं कमजोर होगा और तुम्हारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि के लिए एक बात और बता दूँ कि यदि मेरा एक पौंड वजन का जाल लिया जाए तो उसे पूरी पृथ्वी के चारों ओर सात बार लपेटा जा सकता है।

एक पल के लिए वहाँ सन्नाटा छा गया। सन्नाटे को तोड़ते हुए शेर ने बात आगे बढ़ाई।– अब तो तुम्हें पता हो गया होगा नादान मनुष्य कि तुम इन जीव-जन्तुओं से कितने महान हो? अब जरा तुम अपनी घमण्ड की चिमनी से उतरने की कोशिश करो और हमेशा इस बात का ध्यान रखो कि सभी जीवों में कुछ न कुछ मौलिक विशेषताएं पाई जाती हैं। सभी जीव आपस में बराबर होते हैं। न कोई किसी से छोटा होता है और न ही कोई किसी से बड़ा। समझे?

–लेकिन इसके बाद भी तुम्हारा स्वभाव अगर नहीं बदला और तुम जीव-जन्तुओं को सताते रहे तो तुम्हें इसकी कठोर सजा मिलेगी।– कहते हुए शेर के पास खड़े हाथी ने सलिल को अपनी सूंड में लपेटा और जोर से ऊपर की ओर उछाल दिया।

सलिल ने डरकर अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन जब उसने वापस अपनी आँखें खोलीं तो न तो वह जंगल था और न ही वे जानवर। वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था।

–इसका मतलब है कि मैं स्वप्न...।– सलिल मन ही मन बडबड़ाया। उसने अपनी पलकों को बन्द कर लिया और करवट बदल ली। शेर की कही हुई बातें अब भी उसके कानों में गूंज रही थीं। ●

● सदा सत्य बोलो झूठ बोलने वालों का लोग विश्वास नहीं करते और उनका तिरस्कार होता है।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

चीकू ने मन ही मन सोचा- यह आम का पेड़ तो कुछ दिनों में फलों से भर जाएगा, क्यों न यहीं अपना बसेरा बनाया जाए।

वह फौरन उछलकर पेड़ पर चढ़ गया और कोयल पर चिल्लाता हुआ बोला, "बंद करो गाना-बजाना। आज से यह पेड़ मेरा घर है। भागो यहाँ से।"

कोयल डरते हुए बोली, "लेकिन चीकू भैया, पहले तो मैं ही यहाँ आई थी।"

कोयल के ऐसा बोलते ही चीकू ने उसे गुस्से से घूरा और कहा, "दिखाओ जरा अपना घोंसला। सभी जानते हैं कि तुम खुद तो अपने अंडे कौए के घोंसले में देती हो।"

चीकू के मुँह से ऐसी बातें सुनकर कोयल बहुत दुखी हुई और वह उदास मन से दूसरे पेड़ पर चली गई।
तभी पास के अमरुद के पेड़ पर रहने वाली गिल्लू गिलहरी बोली, "चीकू, तुम्हें कोयल से ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिए था।"
लेकिन चीकू के कान पर जूं तक न रेंगी।
उलटा वह गिल्लू पर बरस पड़ा, "तुम मुझे मत सिखाओ।" मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं?

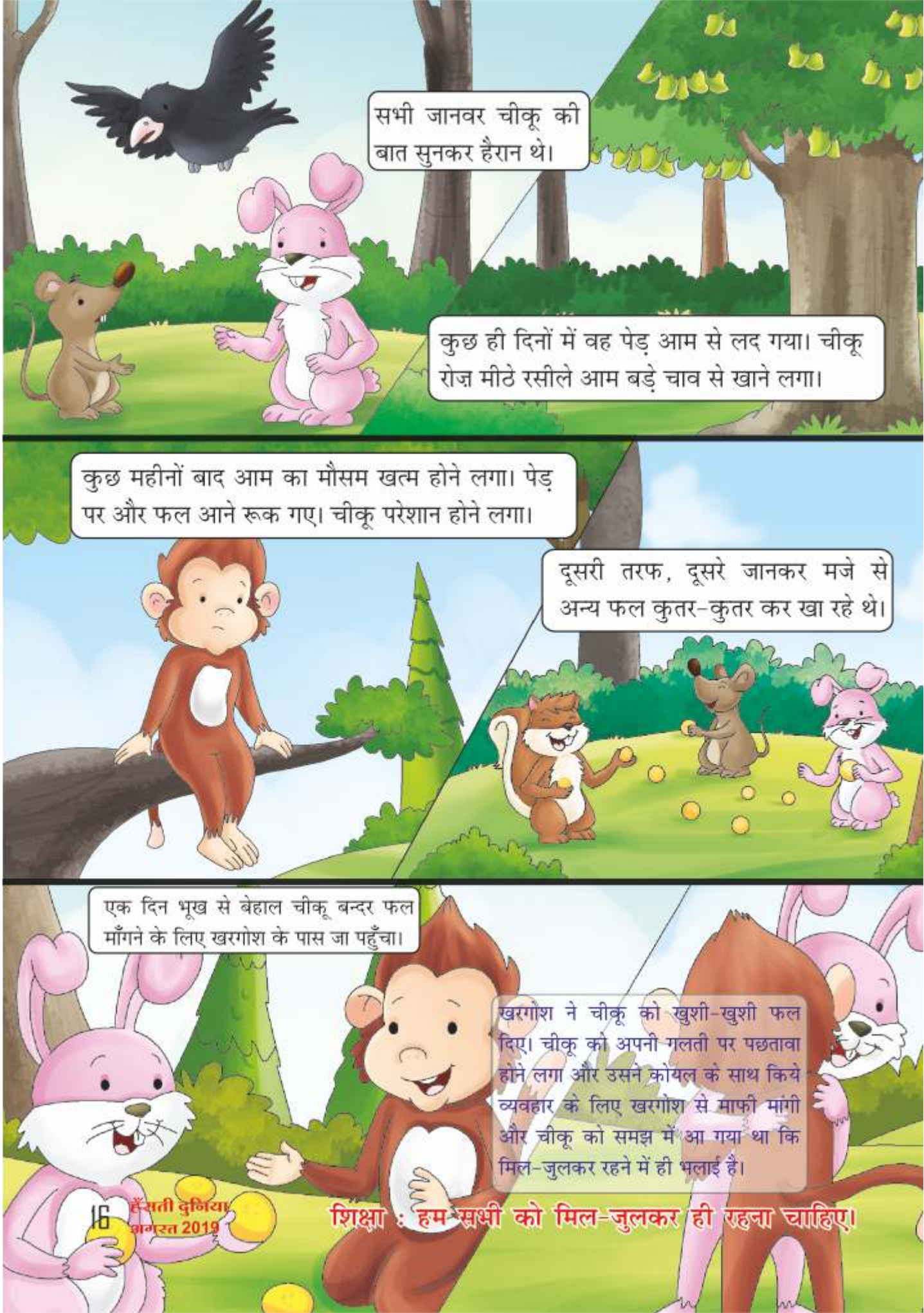
सभी जानवर चीकू की बात सुनकर हैरान थे।
कुछ ही दिनों में वह पेड़ आम से लद गया। चीकू रोज़ मीठे रसीले आम बड़े चाव से खाने लगा।
कुछ महीनों बाद आम का मौसम खत्म होने लगा। पेड़ पर और फल आने रूक गए। चीकू परेशान होने लगा।
दूसरी तरफ, दूसरे जानकर मजे से अन्य फल कुतर-कुतर कर खा रहे थे।
एक दिन भूख से बेहाल चीकू बन्दर फल माँगने के लिए खरगोश के पास जा पहुँचा।
खरगोश ने चीकू को खुशी-खुशी फल दिए। चीकू को अपनी गलती पर पछतावा होने लगा और उसने कोयल के साथ किये व्यवहार के लिए खरगोश से माफी मांगी और चीकू को समझ में आ गया था कि मिल-जुलकर रहने में ही भलाई है।
शिक्षा : हम सभी को मिल-जुलकर ही रहना चाहिए।

बाल गीत : डॉ. ममता खत्री

आजादी का बिगुल

आजादी का बिगुल बजा जब, चमका गगन में तारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व, वह भारतवर्ष हमारा था।।

सुनी कहानी आजादी की,
हमने अपनी नानी से।
देश की सत्ता पाई हमने,
वीरों की कुर्बानी से।।

देश हो गैरों की मुट्ठी में, हमको नहीं गंवारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व, वह भारतवर्ष हमारा था।।

बनते ही गणतन्त्र देश का,
विश्व में ऊँचा नाम हुआ।
छंटा अंधेरा निकला सूरज,
पूरा हर अरमान हुआ।।

शत-शत नमन वीरों को जिनके लहु ने इसे संवारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व, वह भारतवर्ष हमारा था।।

हम हैं नन्हें-मुन्ने,
सपने लेकिन हैं बड़े-बड़े।
तेरी रक्षा सदा करेंगे,
भारत माँ हम खड़े-खड़े।।

लहराएगा सदा तिरंगा, यही संकल्प हमारा था।
हुआ अचम्भित सकल विश्व, वह भारतवर्ष हमारा था।।

अन्तरिक्ष में होगा भारत का अपना स्पेस स्टेशन

नई दिल्ली। इसरो चीफ ने ऐलान किया है कि भारत अपना खुद का स्पेस स्टेशन बनाएगा। यह देश के लिए एक बड़ी उपलब्धि होगी। अगर ऐसा हुआ तो दुनिया में तीसरा स्पेस स्टेशन भारत का होगा। अभी तक अंतरिक्ष में दो ही स्पेस स्टेशन हैं। पहला– अमेरिका, रूस, जापान और यूरोपीय देशों ने मिलकर बनाया है। इसका नाम इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (ISS) है। दूसरा स्पेस स्टेशन चीन का है। स्पेस स्टेशन धरती से करीब 400 किलोमीटर (स्पेस के बाहरी हिस्से में) ऊपर होता है। साथ ही वह धरती के चक्कर लगाता रहता है।

इसरो ने सूरज के पास तक सैटेलाइट भेजने की बात भी कही है। अभी तक सूरज के पास केवल अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा पहुँचा है। पिछले साल नासा ने 'पार्कर सोलर प्रोब यान' को लॉन्च किया था, जो कि 61 लाख किलोमीटर की दूरी से अगले सात साल में सूरज के 24 चक्कर लगाएगा। अब तक कोई यान सूरज के इतने करीब नहीं पहुँचा। अमेरिका का यह 612 किलो का यान 1300 डिग्री सेल्सियस का तापमान सह सकता है।

ध्वनि से तेज गति का टेस्ट सफल

बालासोर (ओडिशा)। भारत ने हाइपरसॉनिक गति (ध्वनि से भी तेज गति) से उड़ान भरने की काबलियत हासिल कर ली है। पिछले दिनों ओडिशा तट के निकट एक बेस से देश में विकसित मानवरहित स्क्रैमजेट विमान का पहला टेस्ट सफलतापूर्वक पूरा किया। सूत्रों के मुताबिक हाइपरसॉनिक और लम्बी दूरी की मिसाइलों के लिए 'व्हीकल' के तौर पर इस्तेमाल होने के साथ ही इससे कई नागरिक उद्देश्यों की भी पूर्ति हो सकेगी। साथ ही इसके जरिए कम खर्चे पर सैटेलाइट की लॉन्चिंग भी हो सकेगी। पूरी कामयाबी मिलने के बाद भारत कुछ गिने-चुने देशों की लिस्ट में शामिल हो जाएगा।

आदित्य कुमार ने पहली बार में ही JEE Main, NEET और AIIMS MBBS एंट्रेंस पास की

मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। बस इच्छाशक्ति होनी चाहिए, फिर तो सफलता कदम चूमती है। कुछ ऐसा ही होनहार नौजवान आदित्य कुमार सिंह ने कर दिखाया है। पटना के बेली रोड पर स्थित केंद्रीय विद्यालय के छात्र आदित्य ने पहली बार में ही 'जेईई मेन', 'नीट' और 'एम्स एम.बी.बी.एस.' की प्रवेश परीक्षा में सफलता पायी है। इतना ही नहीं, आदित्य कुमार को भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु (आईआईएस) में किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना में रिसर्च के तौर पर चयन हुआ है।

आदित्य कुमार को जेईई मेन में 19 हजार रैंक, नीट में 1758 रैंक, एम्स में 2800 रैंक मिली है। वहीं (आईआईएस) बेंगलुरु में 401 रैंक प्राप्त हुई है। आदित्य कुमार का कहना है कि वह मेडिकल की तरफ ही अपना करियर बनाना चाहता है। आदित्य कुमार ने बताया कि उसने 12वीं में भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान के साथ अतिरिक्त विषय के तौर पर गणित लिया था। इसका फायदा मुझे दोनों प्रवेश परीक्षा देने में हुआ।

– संकलन : श्रीराम प्रजापति

लेख : अंकुर श्रीश्रीमाल

दो हजार तरह के होते हैं जुगनू

अपने शरीर से रोशनी पैदा करने वाले चालीस से अधिक जीव-जन्तुओं में से अधिकांश जीव पानी में रहने वाले होते हैं। जुगनू गोबरेला कीड़ा वर्ग का होता है और उड़ने वाला जीव होता है।

जुगनू के शरीर से निकलने वाली रोशनी ठण्डी होती है, गर्म नहीं। अर्थात् इसे हाथ से उठाया जाये तो गर्म नहीं लगेगा।

जुगनू वर्षाऋतु में अधिक दिखाई देते हैं। इस कीड़े का रंग स्लेटी-भूरे रंग का होता है। इसकी आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं। मादा जुगनू के पर नहीं होते। नर जुगनू के होते हैं।

हमारे देश में जुगनुओं की लम्बाई लगभग आधा इंच होती है। वैसे सामान्यतः जुगनू की एक जाति ऐसी भी है जो सिर और दुम दो जगह से रोशनी देती है।

सिर से लाल और दुम की ओर से हरी-पीली रोशनी देने वाला यह जुगनू दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है। इसके सिर की तरफ रोशनी पहले चमकती है फिर दुम की तरफ।

'पायरो फोरस' जाति का जुगनू सबसे अधिक रोशनी देता है। साइबेरिया में भी एक जुगनू अधिक रोशनी देने वाला पाया जाता है तो उत्तर अमेरिका में एक नर जुगनू भी रोशनी देने वाला होता है।

धरती पर कुछ गर्म देश के निवासी तो जुगनुओं से अपने घर में रोशनी करते हैं। वे सूर्यास्त के बाद कुछ जुगनुओं को पकड़कर एक पिंजरे में डाल लेते हैं।

कुछ आदिवासी जातियों के लोग इन्हें पिंजरे में डालकर रात में साथ ले जाते हैं ताकि जंगल में रास्ता देख सकें।

जुगनू रोशनी शरीर के पिछले भाग से देता है। वैज्ञानिकों ने इसकी दुम के इस तरह चमकने का कारण एक रासायनिक तत्व को माना है। यह तत्व है 'ल्यूसीफेरिन'। इस रसायन व जुगनू के रक्त के संयोग से यह चमक पैदा होती है। यह तत्व मादा जुगनू में अधिक होता है। नर जुगनू मादा की चमक देखकर उसके पीछे-पीछे चलता रहता है।

नर जुगनू में रोशनी चमकने और बंद होने का समय लगभग दो सेकिण्ड होता है और मादा में यह समय छः सेकिण्ड।

जुगनुओं की अलग-अलग जातियों में रोशनी की चमक का समय भी अलग-अलग होता है। यह मांसाहारी कीड़ा अपना शिकार बहुत विचित्र तरीके से करता है। इसकी भी मूंछे होती हैं। अपनी मूंछों के बालों को यह शिकार के शरीर पर धीरे-धीरे घुमाता है और एक प्रकार का जहर छोड़ता जाता है। थोड़ी देर में वह जीव निर्जीव-सा होने लगता है। इसके छोड़े जहर का हिस्सा भी एक तरह के रस में बदल जाता है। यह रस ही जुगनू का भोजन होता है।

जुगनुओं को तेज रोशनी रास नहीं आती है। तेज रोशनी में ये जीवित नहीं रह पाते। जुगनुओं के अण्डों से 15 दिन में ही बच्चे निकल आते हैं। प्रायः मादा अण्डे घास पर ही देती है।

जुगनू दलदल, नमी व पानी के आसपास अधिक रहता है ताकि छोटे-मोटे कीड़ों को आसानी से भोजन बना सके। एक जाति की मादा जुगनू कई बार दूसरी जाति के जुगनू को अपनी चमक से पास बुला लेती है और फिर चतुराई से उसे अपना भोजन बना लेती है।

जुगनू की लगभग दो हजार जातियां धरती पर पाई जाती हैं।

बाल कहानी : गोविन्द भारद्वाज

इमली का पेड़

कामरूप के जंगल में एक विशाल इमली का पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत से पक्षियों व जीव-जन्तुओं ने अपना घर बना रखा था। इमली के पेड़ और उस पर रहने वाले जीव-जन्तुओं में बड़ा प्रेम था। किन्तु कभी-कभी इमली का पेड़ घमण्ड भरी बातें किया करता था, जिससे सब उसे घमण्डी दादा कहकर बुलाते थे।

एक बार वर्षाऋतु में भयंकर तूफान आया। जंगल में सैंकड़ों पेड़ नष्ट हो गये किन्तु इमली का पेड़ सुरक्षित रह गया। सभी पक्षी और जीव-जन्तु ईश्वर को धन्यवाद दे रहे थे। ये बात पेड़ ने सुन ली। वह घमण्ड में सिर उठाकर बोला– तुम सब मुझे धन्यवाद देने की बजाय ईश्वर को क्यों धन्यवाद दे रहे हो? तुम्हारे प्राण तो मैंने बचाएं हैं। मेरी ताकत के कारण ही मैं बिल्कुल मजबूत स्थिति में खड़ा हूँ।

उसकी बातें सुनकर एक गिलहरी फुदकती हुई आई और बोली– पेड़ भैया, तुम भी उस ईश्वर को ही धन्यवाद दो जिसको हम सब दे रहे हैं। प्रकृति और सृष्टि को चलाने वाली वही एक मात्र ताकत है। तुम अपने चारों ओर देखो तुम जैसे कितने ही पेड़ नष्ट हो गये हैं।

–हाँ, हाँ ... गिलहरी दीदी बिल्कुल ठीक कह रही है। पेड़ दादा।– कोयल ने मीठी वाणी में कहा।

–तुम सब चुप रहो। जिस थाली में खाती हो उसी में छेद करती हो। यह सब कुछ मेरी मजबूत जड़ों और शक्तिशाली शाखाओं और तने के कारण हुआ है।– इमली के पेड़ ने गुस्से से गिलहरी और कोयल की ओर इशारा करते हुए कहा।

–पेड़ दादा कहावत तो सही बोल दिया करो। थाली वाली कहावत यहाँ सटीक नहीं बैठती। आपको कहना चाहिए कि ''मेरा खाओ और दूसरे का गुण गाओ।''– नन्हीं चिड़िया ने बीच में टोका।

सबकी बात सुनकर तोता आया और इमली के पेड़ को समझाते हुए बोला– पेड़ दादा, घमण्ड की बातें न करो। गिलहरी और कोयल ठीक कह रही हैं। आपको ईश्वर की शक्ति के सामने झुक जाना चाहिए। ये तूफान भी तो उनका ही भेजा हुआ था।– तोते की बात पर इमली के पेड़ को और अधिक

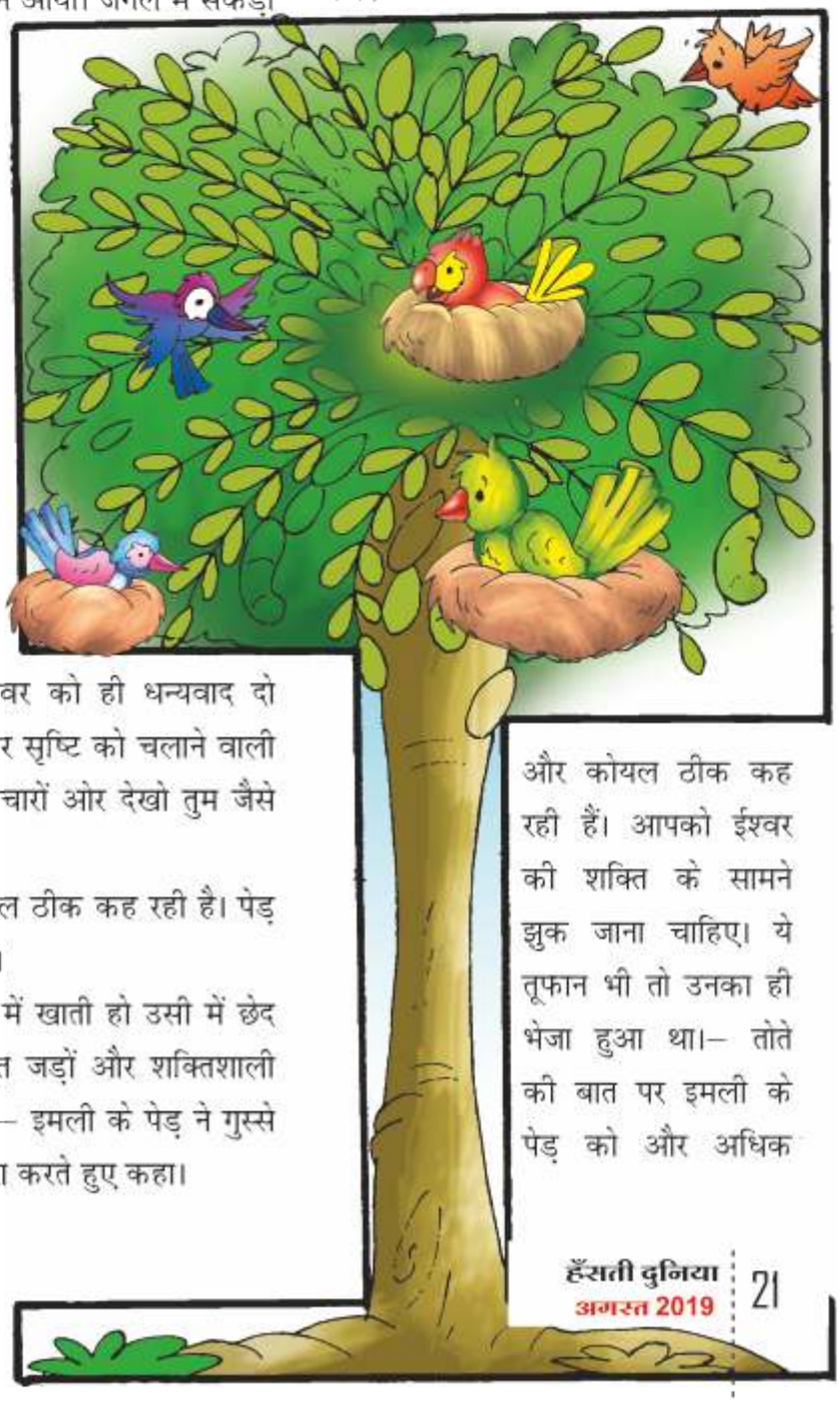

क्रोध आ गया। वह चिल्लाता हुआ बोला– सब निकल जाओ मेरे घर से। मुझे तुम जैसे कृतघ्न दोस्तों को नहीं रखना।

–नहीं... नहीं... पेड़ दादा। मुझे मत निकालो। मैं कहता हूँ कि तुम ही शक्तिशाली हो। तुम अपनी शक्ति के बल पर सुरक्षित बचे हो। तुम सारे पेड़ों में महान हो।– कौवे ने कांव-कांव करते हुए कहा।

स्वाभिमानी पक्षी इमली के पेड़ से नाराज होकर वहाँ से चले गये। पेड़ बिल्कुल सुनसान हो गया। केवल कौआ ही वहाँ ठहरा हुआ था। उसके मन में लालच था कि वर्षाऋतु में कौन नया घोंसला बनायेगा। यहाँ तो सबके घोंसले उसे खाली मिल गये थे।

अचानक एक दिन जोरदार भूकम्प आया। पृथ्वी कांपने लगी। जंगल थर्राने लगा। सारे पेड़ हिल रहे थे, इमली का पेड़ चरमराता हुआ धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। कौआ भी उसके नीचे दबकर मर गया। इमली का पेड़ चिल्ला रहा था। ''कोई मुझे बचाओ, मुझे खड़ा करो।'' उसकी आवाज आसमान में उड़ते हुए उन पक्षियों ने सुन ली। उधर गिलहरी भी गिटर-पिटर करती पहुँच गई। घमण्डी दादा को जमीन पर पड़ा देखकर सब हैरान थे।

गिलहरी बोली– इतनी शक्तिशाली मजबूत जड़ों और शक्तिशाली भुजाओं वाला पेड़ आज धूल क्यों चाट रहा है?

–अरे तुम कैसे बच गये सबके सब?– घायल पेड़ बोला।

कोयल बोली– तुम्हें पता होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें वो शक्ति दी है जिससे हमें भूकम्प आने की पूर्व सूचना मिल जाती है। हमें पता था भूकम्प आने वाला है इसलिए हम सब आसमान में गिलहरी बहन को लेकर उड़ रहे थे।

तोता बोला– पेड़ दादा यदि तुम में ताकत होती तो भूकम्प का मुकाबला क्यों नहीं किया? यह दशा तुम्हारे घमण्डी स्वभाव के कारण हुई है।

–अरे अब तो जली-कटी बातें मत करो। मेरे प्राण निकल रहे हैं।– इमली का पेड़ रोता हुआ बोला। वहाँ उपस्थित सभी पक्षियों और जीव-जन्तुओं को उस पर दया आ रही थी। उनको लग रहा था कि इमली के पेड़ का घमण्ड टूट गया है।

गिलहरी बोली– पेड़ भैया, तुम मान गये न कि ईश्वर की शक्ति के सामने सब कमजोर हैं। हम तुम्हें बचा तो नहीं सकते किन्तु तुम्हारा वंश जरूर चला लेंगे।

–हाँ... हाँ ... गिलहरी बहन ठीक कह रही है। अभी तुम्हारे फल से बीज निकाल लेता हूँ और यहीं पर उसे बो देता हूँ। कुछ दिनों बाद ही तुम्हारे वंश के रूप में नन्हा पौधा उग आयेगा और एक दिन तुम्हारे जैसा विशाल वृक्ष बन जायेगा।– तोता बोला।

मरणासन्न पेड़ ने ईश्वर से माफी मांगी और सबके सामने हाथ जोड़कर आंसू बहाने लगा। वे पछतावे के आंसू थे। थोड़ी ही देर में उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

बादल की गागर

आसमान में बिजली चमकी,
ठंडी-ठंडी बूंदें टपकी।
मौसम सुखद सुहाना देखो,
मोतियों सी लड़ियां लटकी।।

चिंटू बिट्टू भीगे बस्ते,
छप-छप करते हो गये रस्ते।
ठंडी-ठंडी हवा चली अब,
गरमी को भी उसने पटकी।।

सूरज काका भी शरमाये,
बादलों ने भी उन्हें छुपाये।
चंदा तारे छुप गये सारे,
बादल की तो गागर छलकी।।

क्यारी-क्यारी फूल खिले अब,
झिंगुर मेढक गले मिले सब।
गली मोहल्ले भीगे सारे,
वर्षा रानी देखो लपकी।।

हरियाली का आंगन

हरियाली उतर रही अंगना,
शिशुओं के पैरों पैजनियां।
छनक-छनक बजते हैं घुंघरू,
जैसे वायु झूल रही है पलना।।

चिड़िया कौआ और कबूतर,
रहते हैं सब पेड़ों पर।
सबको अच्छी लगती है हरियाली,
पौधे लगाना काम है अपना।।

जीव-जंतुओं को क्षति न पहुँचे,
वायु प्रदूषण से इन्हें बचाएं।
शुद्ध हवा और हरी धरा हो,
पौधे लगाएं अब हर अंगना।।

बेर पीपल आम लगाएं,
मौसमी संतरा सेब सब खाएं।
हरी-भरी धरती हो अपनी,
मिलकर पर्यावरण की रक्षा है करनी।।

– प्रस्तुति : राधा नाचीज़ (नज़फगढ़)

पहेलियां

1. आगे कटूँ तो बनता थोड़ा,
आगे काट उल्टा करे तीर।
धन-धान्य देती मैं खूब,
जब देते मेरा सीना चीर।

2.. कौन रत्न वो देश का,
कहलाता है बोस।
'जय हिन्द' का दे गया,
हम को जो उद्घोष?

3. उल्टा-सीधा एक समान?
तीन अक्षर का मेरा नाम।
मुझसे सुन्दर दिखे जहान,
जरा बताओ मेरा नाम?

4. बीच कटूं तो बनूं समय,
पीछे कटूं तो काम।
आँखों में शोभा पाती,
बोलो तो मैं क्या कहलाती?

5. सिर पर कलगी न मैं चंदा,
गरजे बादल नाचे बंदा।

6. एक थाली मोतियों से भरी,
सबके सिर पर औंधी धरी।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती फिर भी एक न गिरे।

7. काला है पर कौआ नहीं,
बेढब है पर हौआ नहीं।
करे नाक से सारा काम,
अब बतलाओ उसका नाम?

8. नये जमाने का बच्चा हूँ,
पर कान का कच्चा हूँ।
तुम जो कहते इस पार,
पहुँचा देता हूँ उस पार।

9. तीन अक्षर का उसका नाम,
आता है जो खाने के काम।
अन्त कटे तो हल बन जाए,
मध्य कटे तो हवा बन जाए।

10. नहीं चाहिए इंजन मुझको,
नहीं चाहिए खाना।
मुझ पर चढ़कर आसपास का,
कर लो सफर सुहाना।

11. बिन तेल के जलता है,
पैर बिना वो चलता है।
उजियारे को बिखेर कर,
अंधियारे को दूर करता है।

12. दिखने में वह काला है,
और जलने पर लाल।
फेंकने पर है वह सफेद,
खोलो बच्चों उसका भेद।

उत्तर : 1. धरती, 2. सुभाषचन्द्र बोस, 3. नयन, 4. काजल, 5. मोर, 6. तारों भरा आकाश, 7. हाथी, 8. टेलीफोन, 9. हलवा, 10. साइकिल, 11. सूरज, 12. कोयला।

लेख : विद्या प्रकाश

क्या होता है ?

स्पेस सूट

अन्तरिक्ष यात्रा पर जाने वाले यात्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से स्पेस सूट सुरक्षा कवच की भांति उपयोगी है तथा यह उनके लिए अनेक प्रकार से लाभकारी है। स्पेस सूट की उपयोगिता और आवश्यकता को समझने से पूर्व पृथ्वी मण्डल के वातावरण के सम्बन्ध में जानना जरूरी है।

पृथ्वी के ऊपर के वातावरण में इसके प्रत्येक वर्गमीटर पर एक बड़ी गाड़ी के बराबर दबाव डालता है। हमें इसका अनुभव इसलिए नहीं होता क्योंकि हमारे शरीर के अन्दर और बाहर यह दबाव एक समान होता है। शरीर के अन्दर तथा बाहर के तापमान में भिन्नता होने पर क्या स्थिति उत्पन्न होगी, इसका अन्दाजा एक उदाहरण से किया जा सकता है। यदि धातु के एक बर्तन की भीतर की हवा को इसके भीतर खौलते पानी द्वारा बाहर निकाल दिया जाए तो बर्तन वायुमण्डलीय दबाव के कारण पिचक जाएगा। इसी प्रकार अन्तरिक्ष में गया एक अप्रतिरक्षित अन्तरिक्ष यात्री न केवल फूलकर मर जाएगा बल्कि उसका खून भी गर्म पानी की भांति उबलने लगेगा। तरल पदार्थ किस तापमान पर उबलता है। यह बाह्य वातावरणीय दबाव पर निर्भर करता है।

9 किलोमीटर की ऊँचाई पर पानी 74 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान पर उबलने लगता है। 9 किलोमीटर से अधिक ऊँचाई पर खून शरीर से कम तापमान पर उबलने लगता है। शून्य दबाव पर अन्तरिक्ष यात्री का खून एकदम जानलेवा फोम (झाग) में परिवर्तित हो जाएगा।

इस भौगोलिक और वातावरणीय तथ्य को दृष्टि में रखकर अन्तरिक्ष यात्रियों के सूट इस प्रकार डिजाइन किये जाते हैं ताकि उन्हें आकाशीय यात्राओं के दौरान अन्तरिक्ष में विद्यमान विभिन्न प्रकार के खतरों से बचाया जा सके। अन्तरिक्ष जगत के इन खतरों में अत्यधिक तापमान, खतरनाक विकिरण, तीव्रगति से घूमती हुई वस्तुएं तथा शून्य (वैक्यूम) आदि शामिल हैं।

स्पेस सूट जिसे 'मेंडमेनूवरिंग यूनिट' (एमएमयू) के नाम से भी जाना जाता है, पहनकर लोग अन्तरिक्ष यात्रा में जाते हैं। इस सूट का कपड़ा परतदार बना होता है। इसमें से हर परत का अपना एक उद्देश्य होता है। भीतरी परतों में से एक तापमान को नियंत्रित करता है। इसे पहनकर अन्तरिक्ष यात्री अन्तरिक्षयान को छोड़ सकते हैं तथा स्वतंत्र रूप से अन्तरिक्ष लोक में उड़ सकते हैं। इसमें ऑक्सीजन गैस के लिए भी आवश्यक व्यवस्था होती है।

प्रत्येक सूट में एक आधारभूत लाइफ सपोर्ट प्रणाली होती है। इसमें आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा में पानी तथा ऑक्सीजन रखी जा सकती है। जिनकी सहायता से अन्तरिक्ष यात्री कई घंटों तक अन्तरिक्ष जगत में चहलकदमी कर सकते हैं। स्पेस सूट में लिक्विड कूलिंग तथा वेंटिलेशन प्रणाली होती है।

दरअसल प्रत्येक स्पेस सूट बहुत से अलग-अलग टुकड़ों से मिलकर बना होता है। प्रत्येक टुकड़े को निश्चित आकार के हिसाब से बनाया और तैयार किया जाता है। अन्तरिक्ष की जोखिम भरी यात्रा में जाने वाले व्यक्ति को इन्हीं टुकड़ों से निर्मित ऐसा सूट दिया जाता है जिसमें वह फिट हो सके तथा अपनी यात्रा निरापद और सुरक्षित कर सके।

कहानी : मदन कोथूनियां

चोर की ईमानदारी

अमान नगर राज्य में एक साल भयानक अकाल पड़ा। लोग दाने-दाने को तरसने और भूखों मरने लगे। पशु घास के बिना मरने लगे। पक्षी हवा के गर्म थपेड़ों से मरने लगे। छोटा-सा राज्य था। राजा ने अकाल राहत कार्य शुरू किये। उसने किसानों को अन्न बांटना शुरू कर दिया।

उसी राज्य में एक गाँव था बृजलालपुर। वहाँ एक कुम्हार रहता था। उसके चार बच्चे थे। घर में खाने को अन्न नहीं था। बच्चे रोटी के लिए तड़पते थे। दोनों पति-पत्नी भूखे रहते और किसी तरह दो-चार दाने बच्चों के मुँह में देने की चेष्टा करते। पर अन्त में उनको कुछ भी खिलाने का साधन नहीं रह गया।

कुम्हार की पत्नी बोली– राजा की सेवा में जाओ, वे अन्न देंगे।

कुम्हार राजा की सेवा में गया और अनाज के लिए निवेदन किया। राजा ने पूछा– क्या तुम किसान हो? हमारी भूमि जोतते हो?

–नहीं महाराज, मैं भूमि नहीं जोतता, मैं तो एक गरीब कुम्हार हूँ। मेरे बच्चे भूखे मर रहे हैं। अगले साल मैं आपका अनाज लौटा दूंगा। आप मुझ पर दया करो।

राजा ने टका-सा जवाब दे दिया।– हम तो अपने किसानों को ही अकाल राहत की सुविधाएं दे रहे हैं। सबको नहीं दे रहे हैं।

कुम्हार बेचारा मुँह लटकाये लौट गया। वह सोचने लगा– अब क्या करना चाहिए। बच्चों को भूख से तड़पते नहीं देखा जाता। अन्त में भूखों मरता कुम्हार राजा के अनाज के गोदामों में चोरी करने का विचार करने लगा। उसने अनाज के गोदामों तक एक सुरंग खोदी।

अब वह अनाज के गोदाम तक पहुँचा। उसने देखा गोदाम का ताला बन्द था। उसने लोहे के छड़ से गोदाम के किवाड़ में छेद कर दिया। छेद में से अनाज गिरने लगा। बहुत दिनों बाद अन्न का दर्शन कर बेचारा कुम्हार प्रसन्न हुआ। थैले में अनाज भरकर उसने छेद बन्द कर दिया। प्रसन्न होता हुआ घर आ गया। उसके बाद उसने एक थैली बनायी। ठीक दस किलो के वजन की। फिर वह रोज रात को उस सुरंग से गोदाम तक जाता और एक थैली अनाज की भर लाता। बच्चों के पेट में रोटी जाने लगी। अधिक अनाज निकालता तो ऊपर गड्ढा हो जाता और किसी को पता लग जाता। इसीलिए वह प्रतिदिन दस किलो अनाज ही लाता था।

कुम्हार ने इस प्रकार एक वर्ष बिता दिया और किसी को पता भी नहीं चला कि वह अनाज कहाँ से लाता है।

साल भर पूरा हो गया और दूसरा वर्षाकाल का मौसम आ गया। बरसात बहुत अच्छी हुई। दिन अच्छे आये। कुम्हार और उसकी पत्नी

दोनों मजदूरी में जुट गये मजदूरी भी खूब चली। खूब अनाज आया।

एक दिन दो गाड़ी अनाज भरकर कुम्हार राजा के किले में पहुँचा। राजा के सामने 'राम-राम' कहकर वह खड़ा हो गया। राजा ने पूछा– क्यों आये हो?

– महाराज आपका अनाज खाया है। अब उसे लौटाने आया हूँ।– कुम्हार ने हाथ जोड़कर कहा।

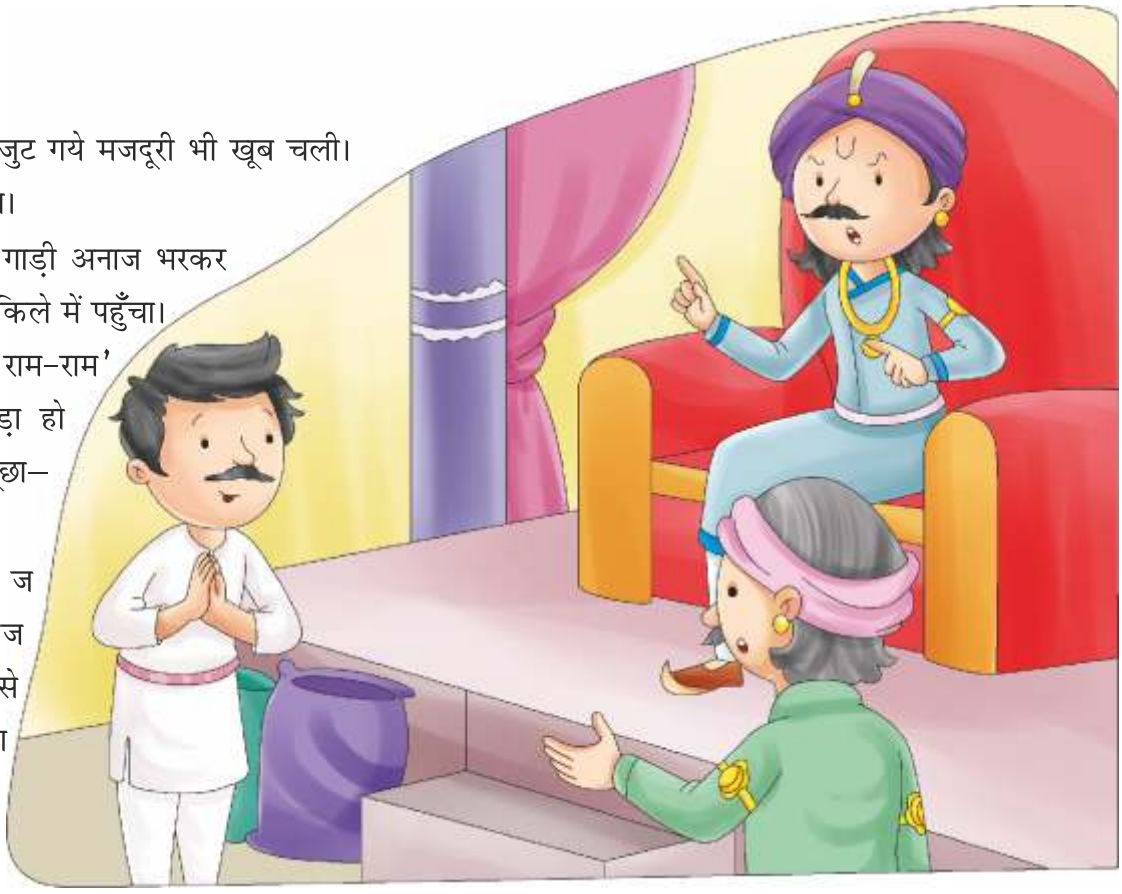

राजा की आँखें क्रोध से लाल हो गयी। वह बोला– इसको तो मैंने अनाज देने के लिए मना कर दिया था फिर किसने इसे अनाज दिया? राजा ने अधिकारी को बुलाया और उससे पूछा– तुमने इसको कितना अनाज दिया है?

–नहीं महाराज, इसको मैंने अनाज नहीं दिया।– अधिकारी बोला।

–तब इसको अनाज दिया किसने।– राजा बोला।

दोनों हाथ जोड़कर कुम्हार बोला– महाराज, मुझको किसी ने अनाज नहीं दिया। मैंने अनाज की चोरी की है। भूखों मरता था, बच्चे रोटी बिना तड़पते थे। मैंने गोदाम तक सुरंग खोदकर गोदाम से अनाज चुराया था। रोज दस किलो चुराता था। इस तरह साल पूरा हो गया। इस साल खूब कमाया, इसीलिये आपका अनाज लौटाने आया हूँ।

राजा ने दांतों तले उंगली दबा ली। यह चोर है या साहूकार? इसने अनाज चुराया है, इसका किसी को पता भी नहीं चला। अरे पता लगाने वाली बात भी तो नहीं थी। इसने छिपाया होता तो कोई नहीं जानता फिर भी यह कुम्हार अपने आप अनाज देने आया है। धन्य है इसको, इसी का नाम ईमानदारी है। इसको चोर कौन कहेगा?

प्रसन्न होकर राजा ने अधिकारी से कहा– इसको अच्छी से अच्छी जमीन दो और अपना जोतदार बना लो। एक जोड़ी बैल दो। ऐसे ईमानदार आदमी को दुखी होने देना ठीक नहीं है।

कुम्हार गाड़ी लेकर घर लौटा। उसकी पत्नी और बच्चे खुश हो गये और प्रसन्न होकर सुख से रहने लगे।

लेख : राधा नाचीज़

छापाखाना (प्रेस) का आविष्कार

बच्चों, आज से पाँच-छः सौ वर्ष पहले बहुत कम लोग पढ़े-लिखे होते थे। लोग पढ़ते भी कैसे? पुस्तकें ही नहीं थीं। थोड़ी बहुत पुस्तकें जो थीं, वे बहुत महँगी थीं क्योंकि वे हाथ से लिखी जाती थीं। एक पुस्तक लिखने में महीनों लगते। फिर यह पुस्तक कोई धनी आदमी खरीद लेता।

प्राचीन काल में आज की तरह कागज और कलम भी नहीं थे। लोग राजहंस या बत्तख के पंखों से कलम बनाते और भेड़ की खाल को साफ करके उससे कागज का काम लेते। फिर अपने मनपसन्द रंग से उस पर लिखते। उन दिनों लिखी हुई प्रत्येक पुस्तक का रंग और लिखावट अलग-अलग होती थी। पर आज तुम्हारी पुस्तकें बिल्कुल वैसी ही हैं, जैसी तुम्हारे अन्य सहपाठियों की पुस्तकें हैं। यदि छापाखाना (प्रेस) का आविष्कार न हुआ होता तो आज प्रत्येक पुस्तक दूसरी पुस्तक से भिन्न होती और न ही इतनी बड़ी संख्या में पुस्तकें बाजार में मिलतीं? हम पर यह बड़ा उपकार किया 'विलियम कैक्स्टन' ने।

एक बार विलियम जर्मनी गया तो कई धनी व्यक्तियों से मिला। इन मुलाकातों से विलियम को कई पुस्तकें पढ़ने को मिलीं। एक बार उसे फ्रांसीसी भाषा में लिखी हुई एक पुस्तक मिली। उसे यह पुस्तक इतनी अच्छी लगी कि उसने उसका अंग्रेजी में अनुवाद करना आरम्भ कर दिया। विलियम ने उसे नकल और अनुवाद करने में दिन-रात एक कर दिया। पर पुस्तक बहुत बड़ी थी। वह काफी समय तक अनुवाद में लगा रहा पर अन्ततः उसे हार माननी ही पड़ी। लेकिन उसी दिन से वे सोचने लगे कि कोई ऐसा तरीका होना चाहिए जिससे पुस्तक आसानी से नकल हो जाए और साथ ही बहुत-सी पुस्तकें एक साथ नकल हो सके।

जर्मनी और इंग्लैंड घूमते हुए विलियम को पता चला कि कई लोग लकड़ी को खोदकर अक्षर उभार लेते हैं। फिर उनमें रंग लगाकर कागज पर चिपकाकर उसका प्रतिबिम्ब उतार लेते हैं। विलियम ने सोचा कि लकड़ी के फट जाने पर अक्षर बेकार हो जाएंगे। अतः उसने धातुओं के अक्षर बनाकर एक चौखटा तैयार करवाया। विलियम उस चौखटे में सभी अक्षर इकट्ठे करके कस देता। अक्षर पर स्याही लगाता और कागज चिपका-चिपकाकर उतार

लेता। इस प्रकार शब्द कागज पर बिल्कुल साफ छप जाते। विलियम ने यह आविष्कार पूरा कर लिया और अपना छापाखाना लेकर अपने देश वापस आ गया।

लन्दन आते ही विलियम ने एक दुकान में छापाखाना लगा दिया। दुकान के बाहर बोर्ड लगवाया। सारे संसार का यह सबसे पहला छापाखाना था। विलियम के छापेखाने की हर ओर धूम मच गई। यहाँ तक कि इंग्लैंड का सम्राट एडवर्ड चतुर्थ भी यह विचित्र मशीन देखने आया। विलियम ने अपने छापेखाने में बहुत सी सस्ती पुस्तकें छापीं।

विलियम के बाद छापेखाने की बड़ी उन्नति हुई। संसार के प्रत्येक नगर में कई-कई छापेखाने खुले। उनमें हजारों-लाखों पुस्तकें, पत्रिकाएं और अखबार छपने लगे। आज प्रेस में ऐसी मशीनें लगी हुई हैं जो रातों-रात लाखों अखबार छापकर तैयार कर देती हैं। ●

प्रस्तुति : दिनेश दर्पण (तराना, उज्जैन)

अजूबी बातें?

यह दुनिया बड़ी अनोखी और रंग-बिरंगी है। संसार की कुछ दिलचस्प और निराली घटनाओं की जानकारी हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं–

★ कोस्टारिका के पोआस ज्वालामुखी से लावा नहीं गर्म पानी निकलता है। यह 37 एकड़ में फैला हुआ है और 1000 फुट गहरा है। इससे जो फव्वारा बनता है वह 350 फुट तक ऊँचा जाता है।

★ सबसे बड़ा हिमाच्छादित भूखंड ग्रीनलैंड है। इसका क्षेत्रफल 21,75000 कि.मी. है।

★ वर्नकोट तट पर ज्वारभाटों की उछाल 48 फुट तक जा पहुँचती हैं।

★ चीन की नदी हंगा चांऊफे में 25 फुट तक ऊँचे ज्वार भाटे आते रहते हैं।

★ एक बार कनाडा के जंगल में भयंकर आग लगने से गंधक ऊपर पहुँचा और चन्द्रमा नीला दिखाई देने लगा।

★ स्टॉकहोम में एक ज्वालामुखी फटने पर चन्द्रमा हरा दिखाई देने लगा था। ऐसा 15 दिनों तक चला।

★ चीन का सिंग नाईंग चूर नामक एक ऐसा स्थान है। जहाँ प्रात:काल छाये रहने वाले गहरे कुंहासे के कारण उगते हुए एक नहीं पांच-पांच सूरज दिखाई देते हैं। ● ● ●

बाल कविता : बलतेज कोमल

सैनिक तुम महान हो

सैनिक तुम महान हो।
भारत माँ की शान हो।

गर्मी-सर्दी सहते हो,
हर हाल खुश रहते हो।
जैसे कोई चट्टान हो,
सैनिक तुम महान हो।

भारत के रखवाले तुम,
इसी धुन में रहते गुम।
हिन्द पे मेहरबान हो,
सैनिक तुम महान हो।

मुश्किलों से न घबराते तुम,
काम देश के आते तुम।
कहलाते अमर जवान हो,
सैनिक तुम महान हो।

वार देते तन और मन,
करते हैं तुमको नमन।
तुम तो दयावान हो,
सैनिक तुम महान हो।

बाल कविता : विनेश दर्पण

नया सवेरा

भारत तेरी अमर कहानी,
कहती है यूं बूढ़ी नानी।
भारत का हर बच्चा-बच्चा,
त्यागी और राष्ट्र अनुरागी।।

इस माँ के आंचल का साया,
जिन पर पड़ती उसकी छाया।
वह हो जाता सदा निहाल,
कभी झुके न उसका भाल।।

करो प्रतिज्ञा कभी झुके न,
अपनी भारत माँ का मस्तक।
नया सवेरा आज हुआ है,
देने को भारत में दस्तक।

भारत में प्रथम

प्रस्तुति : ओमसिंह पंवार

★ प्रथम ब्रिटिश गवर्नर जनरल – वारेन हेस्टिंग्स
★ स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल – लार्ड माउंटबेटन
★ भारत के प्रथम मुख्य न्यायाधीश – हीरालाल जे. कानिया
★ स्वतंत्र भारत के प्रथम कमांडर इन चीफ – जनरल सर रॉय बुचर
★ प्रथम भारतीय थलसेना के सेनापति – के. एम. करिअप्पा
★ प्रथम वायु सेनाध्यक्ष – एयर मार्शल थॉमस एल्महर्स्ट
★ प्रथम नौसेनाध्यक्ष – वाइस एडमिरल आर. डी. कटारिया
★ प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री – स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा
★ प्रथम महिला बैरिस्टर – कोर्नेलिया सोराबजी
★ प्रथम महिला चिकित्सक – डॉ. कादम्बिनी गांगुली
★ भारतीय संघ के प्रथम गवर्नर जनरल – सी. राजगोपालाचारी
★ ऑस्कर प्राप्त प्रथम भारतीय – भानु अथैया
★ दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाले प्रथम भारतीय – कर्नल जतिन्दर कुमार बजाज
★ ओलम्पिक में पदक जीतने वाले प्रथम भारतीय – नॉर्मन प्रिचार्ड
★ प्रथम भारतीय आई.सी.एस. अधिकारी – सत्येन्द्रनाथ टेगोर
★ इंग्लिश चैनल को तैरकर पार करने वाले प्रथम भारतीय – मिहिर सेन
★ इंग्लिश चैनल को तैरकर पार करने वाली प्रथम भारतीय महिला – आरती साहा
★ प्रथम मैगसेसे अवार्ड पुरस्कार विजेता – आचार्य विनोबा भावे
★ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम भारतीय – डब्ल्यू.सी. बैनर्जी
★ प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता – रवीन्द्रनाथ टेगोर
★ भारत के प्रथम राष्ट्रपति – राजेन्द्र प्रसाद
★ भारत के प्रथम प्रधानमंत्री – जवाहरलाल नेहरु
★ भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री – सरदार वल्लभभाई पटेल
★ प्रथम भारतीय बोलती फिल्म – आलमआरा
★ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष – एनी बेसेन्ट
★ प्रथम महिला मंत्री – राजकुमारी अमृतकौर

कहानी : कृष्ण शर्मा

गलती का एहसास

सर्दी के मौसम में रविवार की सुबह थी। पार्क में सैर करने के उपरान्त राजू घर लौट रहा था। सड़क के किनारे उसने एक लहूलुहान कुत्ते को कराहते देखा। ऊँची श्रेणी का यह एक छोटा-सा किसी का पालूत कुत्ता था। शायद वह अपने घर से दूर कहीं इस ओर आ फंसा था और गली के आवारा कुत्तों ने उसे घायल कर दिया था।

राजू को उसकी हालत पर बड़ा दु:ख हुआ। उसने उसे बाहों में उठाया और घर ले आया। ठंड से कुत्ते का बुरा हाल था। राजू के दादाजी ने पूरी बात सुनी तो कहा– इसके घाव धोकर दवाई लगाओ और कोयले वाली अंगीठी से इसे गरमी पहुँचाने की कोशिश करो। साथ ही दूध और डबलरोटी खाने को दो।

राजू ने वैसा ही किया। उसने कुत्ते का नाम मोती रख दिया। वह मोती को बहुत प्यार करने लगा। मोती की कूंऽ कूंऽ की आवाज़ उसे बड़ी भली लगती। कुछ ही दिनों में मोती भला-चंगा हो गया।

दिन में जब राजू स्कूल में रहता। तब पीछे दादाजी मोती का ध्यान रखते। लेकिन कभी-कभी उन्हें स्पष्ट महसूस होता कि इस नये वातावरण में मोती खुश नहीं है क्योंकि अधिकतर वह उदास-सा एक कोने में बैठा रहता था। दादाजी ने यही बात कई बार राजू को भी महसूस करवानी चाही लेकिन वह अपनी खुशी में इतना मस्त था कि उसने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

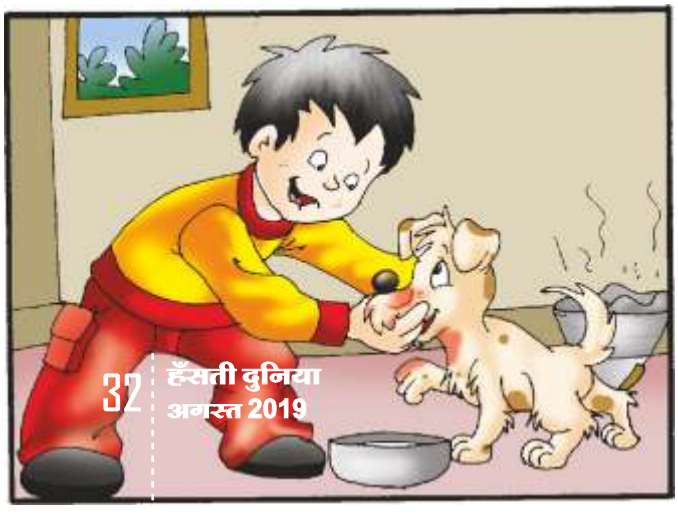

एक रोज राजू स्कूल से लौटा तो दादाजी ने उसे अखबार का एक पन्ना दिखाकर कहा– ''बेटे देखो, अखबार में तुम्हारे मोती की गुमशुदगी का विज्ञापन छपा है। साथ ही इसकी तस्वीर भी छपी है। यह एक संयोग ही है कि मोती का असली नाम भी मोती ही है। इसका असली मालिक तुम्हारी ही उम्र का एक लड़का रिंकू है। मोती के खो जाने से रिंकू बहुत परेशान है। उचित यही होगा कि तुम आज ही मोती को विज्ञापन में दिये पते पर पहुँचा आओ।''

–नहीं नहीं दादाजी, मैं मोती को कभी नहीं लौटाऊँगा। मैं इसके बिना नहीं रह सकता।– राजू ने जल्दी से कहा। कहते-कहते उसकी आँखों में आंसू भर आये।

दादाजी ने बहुत समझाया लेकिन वह नहीं माना। वे जानते थे कि राजू को अब मोती से अलग कर पाना इतना आसान नहीं है। लेकिन रिंकू का ख्याल आते ही वह कुछ न कुछ करने को तत्पर हो उठे। खूब सोच-विचार कर दादाजी ने एक योजना बनाई और आशा की कि जो होगा अच्छा ही होगा।

अगले दिन जब राजू स्कूल से लौटा तो घर में मोती को कहीं भी न पाकर स्तब्ध रह गया। दौड़कर वह दादाजी के कमरे में गया। दादाजी पुस्तकें झाड़-पोंछकर अलमारी में रख रहे थे। उसने

चिल्लाकर पूछा– दादाजी, मोती घर में कहीं भी नहीं है, कहाँ चला गया?

दादाजी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए उत्तर दिया।– तुम्हारी माँ शायद मिन्नी को लेने उसके स्कूल गई है। काफी देर से मैं तो अपने कमरे से बाहर ही नहीं निकला। हाँ, बहुत पहले माली को गाँव ले जाने के लिए उसका एक रिश्तेदार आया था। तभी कहीं मेन गेट खुला देख मोती बाहर सड़क पर न चला गया हो। यह सुनते ही राजू ने रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया।

माँ लौटी तो उसने भी यही कहा कि वह अपने काम में बहुत व्यस्त थी इसलिए इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती। माँ ने उसे खाना खिलाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसने खाना भी नहीं खाया।

बहुत देर बाद दादाजी उसके पास आए। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने उसे समझाया– बेटे, मोती तुम्हारे पास कुछ ही दिनों से है फिर भी उसके खो जाने से तुम्हें कितना कष्ट पहुँचा है। जरा सोचो कि इसके खो जाने से रिंकू को कितना दु:ख होता होगा जिसके पास मोती न जाने कब से रहता आ रहा था। बस, यही एहसास करवाने के लिए मैंने तुम्हारे साथ एक नाटक किया है। मोती हमारे पड़ोसियों के घर में सुरक्षित है। लेकिन उसे घर लाने से पहले तुम उसे रिंकू को लौटा आने का मुझे वचन दो और हाँ तुम्हारे लिए एक खुशखबरी है। आज सिक्किम से तुम्हारे पापा का फोन आया था। उन्होंने बताया कि प्रमोशन पाकर अब वे कर्नल बन गये हैं। इसी माह के अन्त में वे छुट्टी पर आ रहे हैं और अपने साथ तुम्हारे लिए एक प्यारा-सा पिल्ला भी लाएंगे।

राजू मुग्ध होकर सारी बातें सुन रहा था। दादाजी के गले से लिपटते हुए उसने उत्तर दिया– दादाजी, मुझे क्षमा कर दो। मैं सचमुच रिंकू के साथ अन्याय कर रहा था। कल रविवार है। कल ही मैं मोती को उसके घर पहुँचा आऊँगा।– कहकर वह पड़ोसियों के घर की ओर भागा।

दूसरे दिन राजू मोती को लेकर अखबार वाले पते पर पहुँचा तो रिंकू के घर के पास पहुँचते ही मोती में गजब की फुर्ती आ गई। एक साफ-सुथरे तथा बड़े घर के सामने मोती रूक गया और धीमे-धीमे 'भौं भौं' करने लगा। उसकी आवाज़ सुनते ही लपक कर एक लड़के ने गेट खोला तो मोती कूदकर सीधा उसकी गोद में जा चढ़ा। यही रिंकू था। उसने बड़े प्यार से राजू को अपने कमरे में बैठाया।

रिंकू के माता-पिता भी राजू से मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। काफी समय तक राजू रिंकू के साथ रहा। दोनों पक्के मित्र बन चुके थे।

शाम को घर लौटते हुए स्वयं राजू भी बहुत प्रसन्न था कि उसने जल्दी ही अपनी भूल सुधार ली और उसे रिंकू जैसा एक प्यारा दोस्त मिल गया।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

स्वच्छ भारत अ
स्वच्छ
भारत
तुमने बिल्कुल ठीक कहा किट्टी बेटा! बच्चों, स्वच्छता से हमारा तन और मन दोनों निर्मल व स्वच्छ रहते है तथा वातावरण भी शुद्ध रहता है।
टीचर जी, मैं तो अपने घर के अन्दर, बाहर तथा आस–पड़ोस में सफाई का विशेष ध्यान रखती हूँ।
शाबाश, किट्टी! बच्चों आप सभी ने तो देखा ही होगा कि हमारी सरकार एवं बहुत–सी संस्थाएं हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए इस अभियान में लगी हुई हैं।

हाँ! टीचर जी, मैंने टी. वी. पर प्रचार भी देखा था जिसमें लोग सड़क पर झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान का प्रचार कर रहे थे।

ठीक कहा किट्टी तुमने! बच्चों उनकी इस पहल को हम सभी को अपनाना होगा। क्योंकि भारत हमारा देश है, और हम इसमें रहते हैं। इसकी हर सड़क–गली को साफ रखना हमारा कर्तव्य है।

आप बिल्कुल सही कह रही हो टीचर जी

जी टीचर जी, हम भी इस अभियान में शामिल होकर स्वच्छता को अपनाएंगे।

बहुत अच्छा बच्चों! अब से आपका भी कर्तव्य है कि अपने आस–पास कूड़ा इकट्ठा न होने दे, कूड़ेदान का हमेशा प्रयोग करना चाहिए। और सुनो अगर कोई इधर–उधर कूड़ा या गंदगी फैलाता हुआ नजर आए तो उसे मना करो।

टीचर जी! इसके साथ ही हम अपने मुहल्ले का भी दौरा करेंगे और लोगों को स्वच्छता के फायदों के बारे में भी बताएंगे।
बहुत खूब बच्चों। और वैसे भी साफ–सफाई से हम स्वस्थ रहते हैं और गन्दगी से हम बीमार हो जाते हैं।
ठीक कहा आपने टीचर जी! स्वच्छता रहेगी तो हम स्वस्थ रहेंगे।

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

कभी न भूलो

★ अर्जुन बनो.... केवल लक्ष्य को देखो।
– शिव व्हौरिया

★ सुन्दरता की खोज में हम चाहें संसार का चक्कर लगा आयें, अगर वह हमारे अन्दर नहीं है तो कहीं नहीं मिलेगी। –इमर्सन

★ सबसे महान आदमी वह जो दृढ़तम निश्चय के साथ सत्य का अनुसरण करता है। – सेनेका

★ जिसे अपना कर्तव्य नहीं सूझता वह अंधा है।

★ ज्ञान पाप हो जाता है यदि उद्देश्य शुभ न हो।
– अफलातून

★ कर्तव्य पालन ही सच्ची आराधना है।

★ दुष्ट आदमी डर से आज्ञा पालन करते हैं, अच्छे आदमी प्रेम से। – अरस्तु

★ मनुष्य के मन में सन्तोष होना स्वर्ग की प्राप्ति से भी बढ़कर है। सन्तोष ही सबसे बड़ा सुख है उससे बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है।
– वेदव्यास

★ कर्म वो आईना है, जो हमारा स्वरूप दिखा देता है। अत: हमें कर्म का एहसानमंद होना चाहिये।
– विनोबा भावे

★ जिसे धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता, कामयाबी उसकी दासी है।
– स्वामी दयानन्द सरस्वती

★ वह दुर्बल चरित्र वाला है जिसे स्वयं पर काबू नहीं।

★ श्रेष्ठ पुरुष बोलता कम है, पर व्यवहार में अधिक सक्रियता दिखाता है। – कनफ्यूशियस

★ श्रम द्वारा प्राप्त सम्पत्ति ही स्थायी होती है।
– चाणक्य

★ जो श्रम नहीं कर सकता, वह नहीं जान पाता कि विश्राम का क्या अर्थ है और न ही उसे आराम मिलता है। – वेदान्त तीर्थ

★ भलाई करना कर्त्तव्य नहीं, आनन्द है क्योंकि वह प्रसन्नता को पोषित करता है। – पेस्कल

★ सदाचार (सद्व्यवहार) का त्याग करके किसी ने अपना कल्याण नहीं किया। – विष्णु पुराण

★ बुरे विचार ही हमारी सुख-शान्ति के शत्रु हैं।
– स्वेट मार्डेन

★ मीठा व्यवहार अवश्य मिलेगा, तुम मीठे बोल बोलो। – भृर्तहरि

★ जिसके मन में संतोष है। उसके लिए हर जगह सम्पन्नता है।

★ व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं उसके चरित्र से होती है। – महात्मा गाँधी

★ दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान होता है। – जवाहरलाल नेहरु

★ दया और प्रेम भरे शब्द छोटे हो सकते हैं लेकिन वास्तव में उनकी गूंज अन्नत होती है।
– मदर टेरेसा

★ लोग अपने कर्तव्य भूल जाते हैं लेकिन अपने अधिकार याद रखते है। – इंदिरा गाँधी

★ हमारे बलिदान और मेहनत से जो हमें स्वतंत्रता मिलती है, उसे हम अपनी सामर्थ्य से बचाकर रख सकते हैं। – सुभाषचंद्र बोस

★ आजादी की रक्षा केवल सैनिकों का काम नहीं है। पूरे देश को मजबूत होना होगा।
– लाल बहादुर शास्त्री

आज तिरंगे को फहरायें

कविता : शिवनारायण सिंह

कुटिया से महलों तक आओ
आज तिरंगे को फहरायें,
आज तिरंगे के नीचे हम
राष्ट्रगीत मिल-जुल कर गायें।

बापू-नेहरु के सपनों को
आओ हम पूरा करवायें,
आँच न आये आजादी पर
आज तिरंगे को फहरायें।

तोड़ फोड़ है बात बुरी
चलकर सबको हम समझायें,
निर्माणों की बात करें हम
आज तिरंगे को फहरायें।

मानवता हो धर्म हमारा
मजहब कभी न आड़े आये,
रोशन नाम करें भारत का
आज तिरंगे को फहरायें।

बाल कहानी : गफूर स्नेही

खरगोश फिर हार गया

यह कहानी सबको मालूम है कि जंगल में दौड़ हुई और खरगोश उसमें हार गया। बात-बात में खरगोश को किसी ने कह दिया।– अरे भाई तुम चुप रहो, कछुए से हार गये। खरगोश को बहुत बुरा लगा। मैं कछुए क्या हिरन को भी हराऊँगा। वह खरगोश हिरन के पास गया और बोला– मुझे दौड़ में तुम्हें हराना है।

घमण्डी खरगोश को हिरन ने समझाया।– भाई मैं शेर को चकमा देकर आ गया हूँ मगर मैं तुमसे दौड़ तभी लगाऊँगा जब कछुए से जीतकर आओगे।

खरगोश अपना मुँह लिए लौट आया। उसने कछुए से कहा– तुम मुझसे कब रेस लगाओगे?

कछुए ने कहा– संडे को, आज से चार दिन बाद। तब तक तुम तैयारी कर लो। एक बार हार चुके हो। दुबारा न हारो ऐसी कोशिश करना। वरना जंगल के जानवर इस बार तुम्हारी ज्यादा ही हँसी उड़ाएंगे।

खरगोश गर्व से बोला– तैयारी क्या करना, मैं तो अभी तैयार हूँ। तुम ही तैयारी करो।

कछुए ने कहा– ठीक है, संडे को तैयार रहना। मुझे घरेलू काम है वरना आज ही रेस कर लेते। खरगोश सुनकर चला गया। उसने तैयारी के नाम पर महंगे 'रनिंग शू' खरीदे उन्हें पहनकर वह दौड़ा भागा। उसे लगा जैसे उसके पंख लग गये हैं। वह सोचने लगा।– अब कछुआ क्या चीज है? हिरन भी मात खा जाने वाला है। उसे एक-एक दिन भारी लग रहा था। काश! यह समय जल्दी बीत जाता। जल्दी-जल्दी उसे जीत मिल जाए। वह हारा हुआ नहीं अपने को विजेता कहलाना चाहता था।

कछुए ने तो नहीं खरगोश ने ही सबसे कह दिया था।– कछुए को हारते और मुझे जीतते देखना चाहो तो आजाद मैदान में सुबह आठ बजे आ जाना। आखिर संडे आया। रेस देखने सब लोग आ गये। वहाँ खरगोश 'रनिंग शू' में डांस करते हुए अपने को गर्म कर रहा था। जंगली जानवर कानाफूसी करने लगे। खरगोश का तो रोआं रोआं गर्म होता है। अलग से गर्म क्यों हो रहा है? यह गर्मी ही इसे फिर हरा देगी। देखना कछुआ ही जीतेगा। कोई खरगोश की जीत पर शर्त नहीं लगा रहा था। हाँ कछुए की जीत पर सब शर्त लगाने को तैयार थे।

खैर, भालू 'ट्रैफिक पुलिस विसल' लेकर वहाँ आ गया। उसने नियम बताए।

खरगोश सोच रहा था– वह स्टॉर्टिंग से फिनिशिंग तक तेज और तेज दौड़ लगायेगा। अब की बार वह पेड़ देख उसकी छांव में नहीं सुस्तायेगा। अति उत्साह में वह स्टार्ट में आगे बढ़-बढ़ जा रहा था।

भालू ने कहा– चैंपियन, आउट कर दूंगा और कछुए को विजेता घोषित कर दूंगा। धमकी का असर हुआ। स्टार्ट में नियम का पालन किया मगर एक दो कदम के बाद उसने इतना जोर लगाया कि सन्तुलन

खो बैठा। मुँह के बल जा गिरा। उसके मुँह, नाक व आँखों में धूल और कचरा भर गया। जीत के प्रयास में अंधे की तरह दौड़ा तो गड्ढ़े में जा गिरा। जैसे-तैसे निकला तो एक बड़े पत्थर से जा टकराया और घायल हो गया। सब खरगोश के पागलपन पर चकराए। कछुआ ऐसे फिर जीत गया तो कुछ ने उसे कंधे पर बैठा लिया।

उसने कहा– मुझे छोड़ो, खरगोश भाई को सम्भालो उसे गहरी चोट तो नहीं लगी। उपस्थित भीड़ कछुए की भावना देखकर दंग रह गई। कुछ जंगलवासी दौड़े। उसके सिर पर चोट से खून बह रहा था। जानवर उसे वैद्य कौए के पास ले गये। उसने पट्टी बांधी। आँखें, नाक-मुँह साफ किए। वह थोड़ी देर में होश में आते ही सब समझ गया। कछुआ पास में बैठा उसे चिन्तित होकर देख रहा था। होश में आते देखकर खुश हुआ फिर बोला– मेरे कारण तुम्हें चोट पहुँची। मैं हार स्वीकारता हूँ। तुम विजेता हुए समझो।

कौए ने समझाया– ये जूते, टोपी नहीं जीताते। आदमियों की कहावत है– युद्ध सिर्फ हथियार से नहीं धैर्य और हौंसले से जीता जाता है। उसी तरह धैर्य से सब हासिल होता है। हड़बड़ी और चंचलता, घबराहट से नहीं।

खरगोश ने स्वीकार कर लिया– 'मन को जीतना ही सच्ची विजय है।'

जानकारीपूर्ण लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

भारतीय गेंडा

गेंडा विश्व का दूसरा विशालतम शक्तिशाली प्राणी है। यह अफ्रीका के घने जंगलों, भारत, नेपाल, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि देशों में पाया जाता है। वर्तमान समय में गेंडे की पाँच प्रजातियां शेष बची हैं। दो अफ्रीका तथा तीन एशिया में। अफ्रीका का एक सींग वाला सफेद गेंडा सर्वाधिक विशाल होता है। इसका वजन तीन टन से भी अधिक होता है। सुमात्रा का दो सींग वाला गेंडा सबसे छोटा होता है। इसका वजन एक टन से भी कम होता है।

भारतीय गेंडा अपने आकर्षक आकार-प्रकार एवं मोटी परतदार त्वचा के कारण विश्वविख्यात है। यह अफ्रीका के सफेद गेंडे से कुछ छोटा होता है तथा इसके भी एक सींग होता है। इसके निचले जबड़ों में दो दांत भी होते हैं। जो अन्य पशुओं से लड़ते समय आयुध का काम करते हैं।

किसी समय भारतीय गेंडा उत्तर हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों नेपाल से लेकर हिन्दुकुश तक पाया जाता था किन्तु अब केवल आसाम के आरक्षित जंगलों में ही बचा है।

गेंडा घास-फूस, जड़ें तथा विभिन्न प्रकार की जंगली वनस्पतियां खाने वाला स्तनपायी पशु है। यह घने वनों में पानी के किनारे, एकान्त में रहना पसन्द करता है। सामान्यतया भारतीय गेंडा शान्तिप्रिय होता है और किसी पर हमला नहीं करता है। जंगल के दूसरे पशु भी गेंडे के विशाल शरीर को देखकर उससे दूर रहना ही पसन्द करते हैं किन्तु यदि इसे छेड़ा जाये तो यह भयानक हो उठता है तथा अपने सींग से शत्रु पर आक्रमण करता है।

गेंडे का सींग वास्तव में सींग न होकर बालों का कठोर गुच्छा होता है। कभी-कभी अन्य गेंडों या शेर आदि से लड़ते समय इसका सींग टूट जाता है किन्तु एक वर्ष के भीतर पुनः निकल आता है। गेंडे का शरीर बहुत भारी होता है तथा टांगें छोटी होती हैं। फिर भी यह चालीस किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से दौड़ सकता है। यह गर्मियों में कीचड़ वाले स्थान पर घंटों पड़ा रहता है। बाहर निकलने पर इसके शरीर से भरा हुआ कीचड़ स्वतः सूख जाता है। यह मिट्टी की परत एक कवच का कार्य

करती है। इससे इसे मच्छर मक्खियां तथा इसी प्रकार के दूसरे कीड़े-मकोड़े नहीं काट पाते तथा गेंडा इनसे सुरक्षित रहता है।

भारतीय मादा गेंडा एक समय में केवल एक बच्चे को जन्म देती है तथा इसका प्रसवकाल अट्ठारह महीने का होता है। सामान्यतया एक गेंडे की आयु पचास वर्ष होती है। किन्तु इनका शिकार इतना अधिक किया जाता है कि शायद ही कोई गेंडा पचास वर्ष की आयु तक जीवित रह पाता हो।

एक सींग वाले भारतीय गेंडे अब केवल आसाम के कांजीरंगा आरक्षित अभयारण्य में ही बचे हैं। सर्वप्रथम सन् 1905 में शिकार के शौकीन कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने आसाम में एक विशाल वन क्षेत्र को कांजीरंगा रिजर्व फॉरेस्ट बनाया। यहाँ ये लोग हिरण आदि का शिकार करते थे। अंग्रेजों का शिकार स्थल होने के कारण कांजीरंगा की देखभाल पर विशेष ध्यान दिया गया जिसके परिणामस्वरूप यहाँ वन्यजीवों की संख्या में तेजी से विकास हुआ। सन् 1916 में कांजीरंगा रिजर्व फॉरेस्ट को गेम रिजर्व का नाम दिया गया तथा बिना अनुमति पत्र के बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर रोक लगा दी गयी। इससे यहाँ वन्यजीवों की चोरी छिपे की जाने वाली हत्याएं बहुत कम हो गयीं।

भारत की आजादी के बाद भारत सरकार ने सन् 1950 में कांजीरंगा गेम रिजर्व को कांजीरंगा अभयारण्य घोषित कर दिया तथा इसमें विचरण करने वाले वन्य प्राणियों की सुरक्षा के विशेष प्रयास किये गये हैं।

जानकारी : शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कैसे मनती राखी

राखी का त्योहार अनेकता में एकता की भावना को दर्शाता है। हालांकि उत्तर भारत में यह त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, पर भारत के अन्य क्षेत्रों में भी विभिन्न प्रकार से इस त्योहार की धूम रहती है।

आज से कुछ साल पहले इस त्योहार को मनाने का तरीका कुछ अलग था। इस दिन परिवार का पुरोहित यजमान के घर आकर घर के सभी सदस्यों की कलाई पर मौली बांधता था और तिलक लगाता था। पुरोहित द्वारा पवित्र धागा दरवाजों, खिड़कियों तथा नये खरीदे गये बर्तनों पर भी बांधा जाता था और घर के प्रत्येक नये बर्तन पर तिलक लगाता था।

राखी का यह त्योहार महाराष्ट्र के कई समुद्री इलाकों में नारियल पूर्णिमा या कोकोनट फूलमून के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन विशेष रूप से समुद्र देवता पर नारियल चढ़ाकर उपासना की जाती है। नारियल की तीन आंखों को शिव के तीन नेत्रों की उपमा दी जाती है। रक्षाबंधन का यह त्योहार न केवल बहन व भाई के रिश्तों को मजबूत बनाता है बल्कि इससे पूरे समाज के आपसी-रिश्ते की डोर भी मजबूत होती है।

पुलिस में भर्ती हेतु आये एक उम्मीदवार से साक्षात्कार में पूछा– भीड़ को तितर-बितर करने के लिए क्या करना चाहिए?

उम्मीदवार बोला– सर! चंदा मांगना शुरू कर देना चाहिए।

पपलू : क्या कल तुम्हारी पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही है?

टपलू : हमारी क्लास तो नहीं, पर हाँ, बच्चे जरूर पिकनिक पर जा रहे हैं।

धन्नूजी का नौकर एकदम गंवार था। एक दिन धन्नूजी ने उसे समझाया– तुम सभ्यता सीखो। किसी को भी सम्बोधन करते समय उसके नाम के आगे 'जी' लगाया करो।

थोड़ी देर में नौकर दौड़कर धन्नूजी के पास आया– साहब जी, साहब जी! बाहर कुत्ते जी ने मुर्गे जी को पकड़ लिया है।

सोनिया : अभी एक लड़का पतंगबाजी के चक्कर में छत पर से गिर पड़ा और दोनों पैरों से हाथ धो बैठा।

नीतू : अरे कोई आदमी हाथों से तो पैर धो सकता है भला वह पैरों से हाथ कैसे धो पाया होगा?

– राकेश वलेचा (गोंदिया)

बैंक में ऋण लेने आए एक किसान से बैंक के अधिकारी ने कागजात भरते हुए पूछा– तुम्हारा नाम?

–मुरारीलाल।

पिता का नाम?

–बिहारीलाल।

उम्र?

–120 वर्ष।

क्या कहा?

–जी अगर वे जीवित होते तो इतने ही वर्ष के होते।

तीन चूहे एक बार इकट्ठे बैठे बातें कर रहे थे। एक बोला– मैं इतना मजबूत हूँ कि एक दिन मैं चूहे मारने की दवाई की पूरी शीशी ही पी गया।

दूसरा बोला– मैं इतना मजबूत हूँ कि एक दिन मैं पिंजरे में बन्द हो गया लेकिन उसे काटकर बाहर निकल आया।

अभी दूसरे चूहे की बात खत्म ही हुई थी कि तीसरा चूहा खड़ा हो गया और बोला– मैं चला, क्योंकि तीन बजे मैंने एक बिल्ले को कुश्ती के लिए ललकार रखा है।

–गुरमीत सिंह टुटेजा (इंदौर)

जंगल में एक चूहा बहुत तेजी से भागा जा रहा था। हिरण ने उसे रोका।

हिरण : भाई! इतनी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?

चूहा : किसी ने हाथी को धक्का देकर गिरा दिया परन्तु सब मेरा नाम लगा रहे हैं।

– आर्यन, पुलकित, उज्ज्वल (करोलबाग, दिल्ली)

सूखाग्रस्त क्षेत्र की एक चुनाव सभा में भाषण करने से पूर्व एक नेता ने अपने सेक्रेटरी से पूछा– लोगों को क्या आश्वासन दिया जाए?

सेक्रेटरी तत्काल बोला– सर! इस इलाके में बहुत सूखा पड़ता है आप फौरन बारिश का आश्वासन दे डालिए।

अध्यापक : (छात्र से) भाईचारे का वाक्य में प्रयोग करो।

छात्र : मैंने दूधवाले से पूछा कि भाई दूध इतना महँगा क्यों बेचते हो भाई।

तो वह बोला– भाई चारा जो महँगा हो गया है।

राकेश : (पहलवान से) तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो।

पहलवान : ज्यादा से ज्यादा चार-पांच।

राकेश : धत्त! तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है जो सुबह पूरे मोहल्ले को उठा देता है।

– भावना निरंकारी (मानसरोवर, जयपुर)

नेताजी भाषण करते हुए बोले– हमने राजनीति के मैदान में अच्छे-अच्छे पहलवानों को पछाड़ दिया है।

इतने में एक आवाज आई– आप क्यों सरेआम झूठ बोल रहे हैं? कल रात को ही आपकी पत्नी आपके पीछे बेलन लेकर दौड़ी थी और आप बिस्तर के नीचे छुप गये थे।

सेठ : (नौकर से) तुमने लेटर बॉक्स में खत डाल दिया?

नौकर : नहीं सेठजी।

सेठ : क्यों नहीं डाला?

नौकर : कैसे डालता? लेटर बॉक्स के बाहर ताला लगा था।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

माँ ने दूध में डबलरोटी डाल दी और दूध बच्चे को दे दिया। तभी बच्चा जोर-जोर से रोने लगा।

माँ ने बच्चे से रोने का कारण पूछा तो कहने लगा– तुमने जो डबलरोटी दूध में डाली थी। सारा दूध वह रोटी पी गई अब मैं क्या पीऊँ?

– रोशन पृथ्वानी (रायपुर)

पौराणिक कथा : अर्चना सौगानी

प्रशंसा के चक्कर में

एक नगर में एक बहुत बढ़िया मूर्तिकार था। वह ऐसी सुन्दर मूर्तियां बनाता था कि असली-नकली में पहचान करना मुश्किल था। एक बार किसी भविष्यवक्ता ने उसे बताया कि फलां दिन उसकी मृत्यु होने वाली है। तब उस मूर्तिकार ने मौत से बचने का एक तरीका ढूंढ़ निकाला। अपनी शक्ल की 25-30 मूर्तियां बनाकर एक विशाल कमरे में रख दी और स्वयं भी मूर्तियों के बीच खड़ा हो गया। जब यमराज के दूत उसे लेने आए तो एक जैसी शक्ल के व्यक्तियों को खड़े देखकर चकरा गये। उनके लिए उस मूर्तिकार को चुनना मुश्किल हो गया।

दूत यमराज के पास गये और अपनी समस्या बताई कि महाराज मृत्युलोक में पहली बार एक ही शक्ल के 25-30 लोग आ गये हैं जिनमें से उस व्यक्ति को पहचानना मुश्किल हो गया है जिसके जीवन का समय समाप्त हो गया है।

यमराज ब्रह्माजी के पास गये। शिकायत की कि महाराज आपने संसार की रचना की। पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ, दो व्यक्तियों की शक्ल भी आपस में नहीं मिलती। अब तो आपने नियम ही तोड़ लिया है। एक, दो-चार नहीं पच्चीस-तीस लोग एक ही शक्ल के बना डाले हैं। हमारे दूत भी परेशान हो गये हैं। जिस व्यक्ति को लाना है उसे पहचानना मुश्किल हो गया है।

ब्रह्माजी यह बात सुनकर बड़े हैरान हुए और कहा– यमराज जी! हमने तो ऐसा नहीं किया। संसार की उत्पत्ति का नियम जो चला आ रहा है, आज भी वही है। आपके दूतों को समझने में कहीं गलती हुई है। चलो हम भी देखते हैं।

ब्रह्माजी यमराज के साथ उसी स्थान पर आए जहाँ पर मूर्तिकार अपनी हमशक्ल मूर्तियों के साथ खड़ा हुआ था। ब्रह्माजी ने देखा तो मुस्कुराए। वह सारी बात समझ गये। उन्होंने मूर्तिकार को अलग करने का तरीका ढूंढ़ निकाला।

ब्रह्माजी बोले– यमराज जी! ऐसा मूर्तिकार तो मैंने पहली बार देखा जो इतनी अच्छी मूर्तियां बनाता है कि असली और नकली में पहचान करना मुश्किल हो गया है। अगर वह मूर्तिकार मुझे मिल जाए तो मैं उसे पुरस्कार दूंगा।

जब मूर्तिकार ने ब्रह्माजी के मुख से अपनी प्रशंसा सुनी तो उससे रहा नहीं गया वह तुरन्त बोल पड़ा– महाराज! ये मूर्तियां तो मैंने ही बनाई हैं।

तब ब्रह्माजी ने मुस्कुराकर यमराज से कहा– लो महाराज! सम्भालो इनको और ले जाओ अपने साथ।

अगर वह मूर्तिकार अपनी प्रशंसा सुनकर चुपचाप खड़ा रहता तो ब्रह्मा जी और यमराज वापस चले जाते। मगर उसे प्रशंसा और अभिमान ने घेर लिया जिस कारण उसे यमलोक जाना पड़ा।

क्या तुम्हें पता है ?

- ★ सूरज की रोशनी से हमें विटामिन 'डी' मिलता है।
- ★ सहारा रेगिस्तान अफ्रीका में है।
- ★ थाइलैण्ड को सफेद हाथियों का देश कहा जाता है।
- ★ सिन्कोवा नामक पेड़ से कुनैन पैदा होती है।
- ★ विमानों और मोटर नावों की गति मापने वाले यंत्र का नाम टेकोमीटर (Techometer) है।
- ★ बिजली के बल्ब का फिलामेंट टंगस्टन का बना होता है।

जून अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **सेफाली गौतम** 14 वर्ष
गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2 **रजत रावल** 13 वर्ष
ई-87, आर्य समाज रोड,
उत्तम नगर, नई दिल्ली

3 **विवेक चौहान** 14 वर्ष
म. नं. 1185/13, सुन्दर नगर,
पोस्ट : एच.एम.टी. कॉलोनी,
अजमेर (राजस्थान)

4 **स्वर्णजीत राणा** 11 वर्ष
सन्त निरंकारी सत्संग भवन,
आदर्श नगर, सतनामपुरा,
फगवाड़ा (पंजाब)

5 **रीतिका** 13 वर्ष
म. नं. 563, सेक्टर : 13,
अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

अजय कुमार (नेठवा, चुरू)
अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर)
मानव (अवतार इन्क्लेव, दिल्ली)
जिया (रानी बाग, दिल्ली)
खुशी (अशोक विहार कॉलोनी, नकोदर),
समदृष्टि (रोहिणी, दिल्ली),
अरुण पंजवानी (धनपुरी)
पूनम (जनरल गंज, कानपुर)
अभिजीत, अलका (बंशीपुर, चन्दौली)
सुरिन्दर (सेंट्रल टॉउन, लुधियाना)
लवलीन, निहारिका (मोहाली)
गर्विता (विकास नगर, भिवानी)
काश्वी (डाबड़ा चौक, हिसार)
हर्षिता (जलालाबाद, फाजिल्का)
यूवान (मीरा कॉलोनी, संगरिया)
श्रेष्ठा (कंचनपुरी कॉलोनी, लखीमपुर खीरी),
कुश, कृष्णा, चिराग, कृष्णा समनानी, मयूर,
आरती, हार्दिक, सुमित (गोधरा)।

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 अगस्त तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अक्टूबर 2019 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

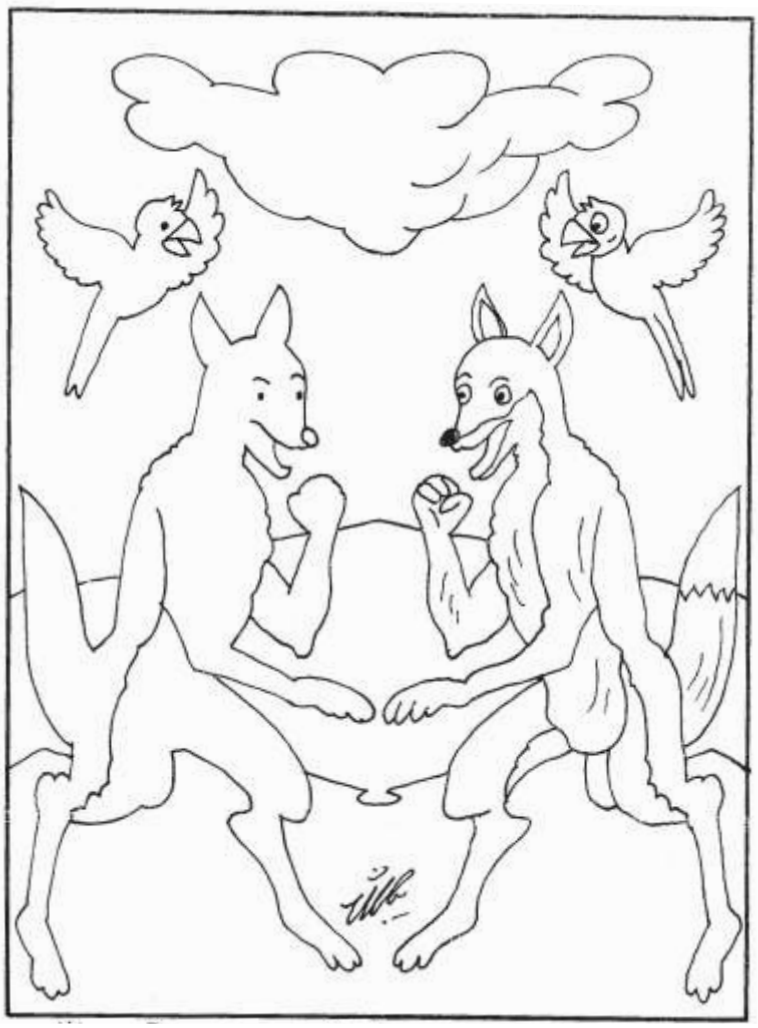

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मैं हँसती दुनिया का नियमित सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनिया के हर अंक की कहानियां एवं कविताएं अच्छी लगती हैं।

इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं जो हमें ज्ञान देती हैं।

यह पत्रिका हम सबको अच्छे गुणों तथा संस्कारों को प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन-दुगूनी रात चौगुनी तरक्की करे।

– गणेश राय (राजा बाजार, दिल्ली)

हम सभी को हँसती दुनिया पढ़ना बहुत पसन्द है। हम काफी समय से यह पत्रिका पढ़ रहे हैं। हँसती दुनिया हम सभी को एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

इसकी सामग्री शिक्षाप्रद, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक होती है। यह पत्रिका बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी है। हमने यह पत्रिका कई बच्चों को भेंट की है। उनको भी यह बहुत पसन्द आई।

इसमें प्रकाशित 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' हमारे मन में एक सकारात्मक सोच भर देते हैं। 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' की व्याख्या हमारे अध्यात्म को और मजबूती प्रदान करती है।

– विश्वनाथ (भिवंडी)

बाल कविता : हरजीत निषाद

वीर बेटियां भारत की

नेहा, निकिता, मिट्ठा, तन्नू,
श्रेया, सृष्टि, मीरा, मन्नू।
वीर बेटियां भारत की हैं,
लता, लक्ष्मी, सरिता, सन्नू।

जीवन है करना रोशन,
है आगे बढ़ने का मन।
पढ़ने सब स्कूल चली,
शौर्य भरा इनका जीवन।

हर बाधा को पार ये करतीं,
कभी न असफलता से डरतीं।
आसमान मुट्ठी में इनकी,
देश का रोशन नाम ये करतीं।

यही बनेगी किरन, कल्पना,
रानी झांसी का ये सपना।
मैरीकॉम का मुक्का हैं ये,
ये भविष्य की हैं सायना।

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में) | सन्त निरंकारी (ग्यारह भाषाओं में) | एक नज़र (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)